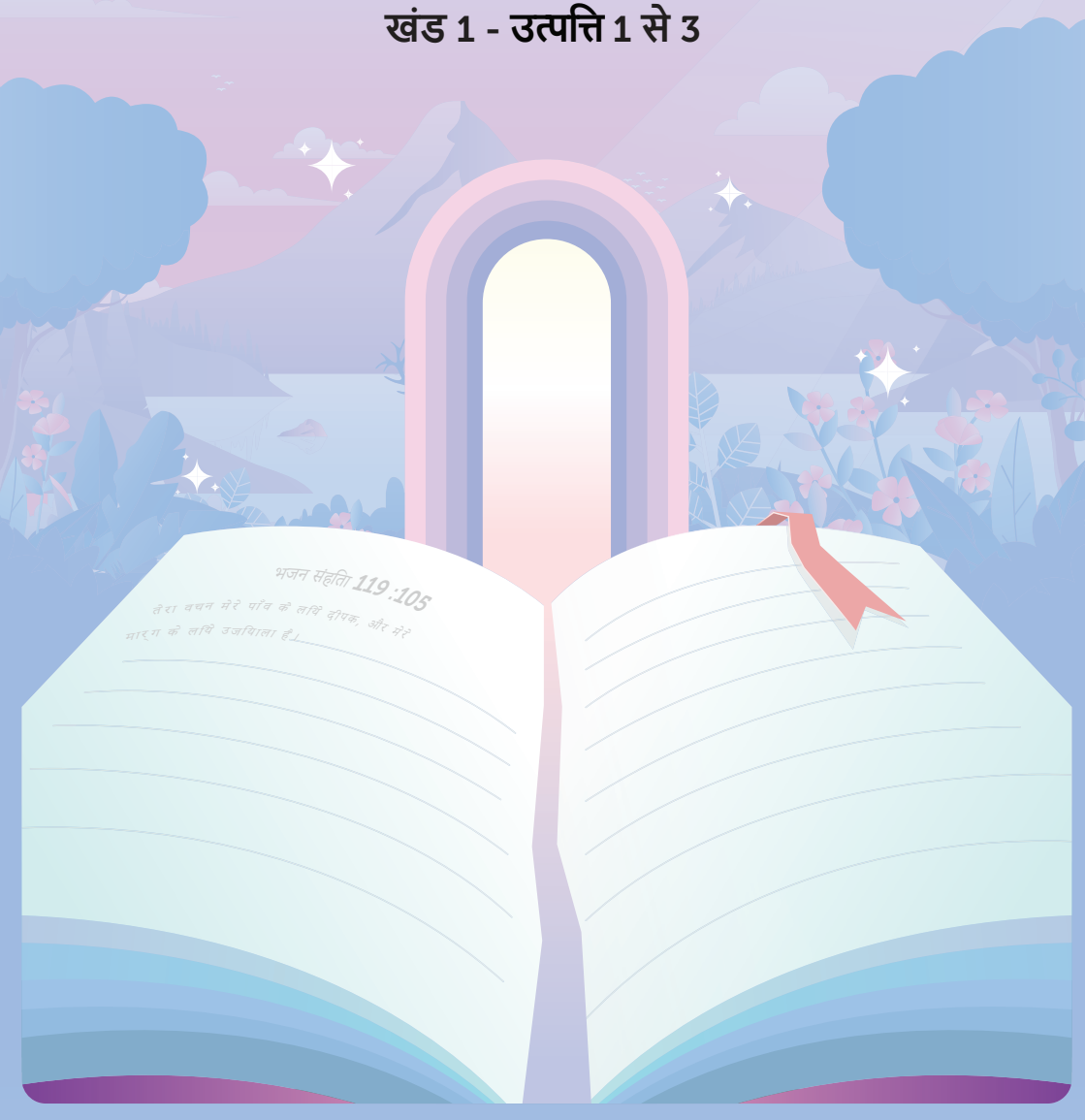
THRU the BIBLE

धर्मशास्त्रीय संवाद

रचना से पतन तक

खंड 1 - उत्पत्ति 1 से 3



स्वागत है दोस्तों

ये **परमेश्वर के संसाधन** हैं जिन्हें आप अपनी गति से पढ़ सकते हैं।

किसी भी समय
सप्ताह के दौरान

सोम मंगल बुध गुरु शुक्र शनि रवि

अपनी सुविधानुसार

आप सारी सामग्री एक बार में पढ़ सकते हैं
(**30-45 मिनट** - पढ़ें, मनन करें और अमल करें)

या

हर दिन कितना पढ़ना है, यह चुनें

या

अपनी गति से रुकने और फिर से शुरू करने के लिए हमारे सुझाए गए विरामों का उपयोग करें।

प्रभु के साथ बिताया गया आपका समय
उनके साथ आपके रिश्ते को समृद्ध करे।

इस अध्ययन की बनावट

शुरुआत	पेज
जीवन जीने के लिए परमेश्वर की बुद्धि का उपयोग क्यों करें?	04
इस धर्मशास्त्रीय जुड़ाव का उपयोग कैसे करें	05
मिलें, साझा करें और बढ़ें	06
अपनी परिस्थिति में परमेश्वर की बुद्धि का उपयोग कैसे करें	07

पाठ

उत्पत्ति संक्षिप्त विवरण	08
उत्पत्ति 1:1	22
उत्पत्ति 1:2 - 31	35
उत्पत्ति 2:1 - 25	57
उत्पत्ति 3:1 - 13	74
उत्पत्ति 3:14 - 24	94

क्यों

जीवन जीने के लिए **परमेश्वर की बुद्धि का** उपयोग करें?

क्योंकि

परमेश्वर ने हमें अपने पुत्र,
हमारे प्रभु
यीशु मसीह
की टीम में शामिल होने के लिए चुना है।

उनका राज्य एक
प्रकाश का राज्य है

यह एक उच्च बुलावा है;
एक पवित्र बुलावा;
एक स्वर्गीय बुलावा

हम
स्वर्ग के नागरिक हैं

पृथ्वी पर **मसीह के प्रतिनिधि** के रूप में भेजे गए

परमेश्वर के वचन से सुसज्जित और सशक्त
जो हमें बताता है कि पृथ्वी पर स्वर्ग के नियमों (परमेश्वर के मानकों) के अनुसार कैसे जीना है।

परमेश्वर की इच्छा को
पृथ्वी पर लागू करना

- शिष्य बनाना
- समुदायों पर प्रभाव

परमेश्वर का नमक और
प्रकाश होना

विजय पाना
अंधकार का साम्राज्य
स्वार्थी दुनिया और शैतान पर

कैसे करें
उपयोग
इस धर्मशास्त्रीय संवाद का



प्रार्थना से शुरुआत करें
प्रत्येक पाठ शुरू करने से पहले, प्रभु से प्रार्थना करें कि वह इसका उपयोग आपको हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के अनुग्रह और ज्ञान में विकसित करने के लिए करें।



पहले बाइबल का अंश पढ़ें।
परमेश्वर से प्रार्थना करें कि वह आपकी आँखें खोलें और उनके वचन की आपकी समझ को गहरा करें।



यदि आप इस अंश पर डॉ. मैक्गी की पूरी शिक्षा सुनना चाहते हैं, तो TTB.org पर जाएँ, ऐप डाउनलोड करें, इसे YouTube पर देखें, या यह सामग्री पढ़ें।



प्रत्येक शिक्षा के बाद, आप अपने विचार के लिए या, यदि आप इसे एक समूह के रूप में पढ़ रहे हैं, तो चर्चा के लिए यहाँ सूचीबद्ध धर्मशास्त्रीय संवाद प्रश्नों को देख सकते हैं।



आत्मा से प्रार्थना करें कि वह आपको जो दिखाना चाहता है, उसे हृदयंगम करने में आपकी मदद करे।

मसीह का वचन तुम्हारे हृदय में सम्पूर्ण बुद्धि और शिक्षा सहित भरपूरी से बसे...
~ कुलुस्सियों 3:16

व्यक्तिगत तैयारी

व्यक्तिगत तैयारी का अर्थ है कि आप इस सामग्री को सप्ताह के दौरान स्वयं पढ़ें।

यदि आप किसी समूह का हिस्सा हैं, तो एक साथ मिलकर और साझा करके आपका योगदान सामूहिक आध्यात्मिक विकास को प्रोत्साहित करेगा।

मिलें बढ़ें बाँटें

मिलें, बाँटें और एक-द्वूसरे को प्रोत्साहित करें



मिलें
सप्ताह में एक बार



कैसे
उपयोग करें
परमेश्वर की बुद्धि को
अपनी परिस्थिति में लागू करें

पढ़ें शास्त्र से जुड़ाव

सोचें इसके बारे में सोचें

उत्तर दें अनुप्रयोग प्रश्नों का

याद रखें इसे अपने अवे अनुभाग में नोट करें।



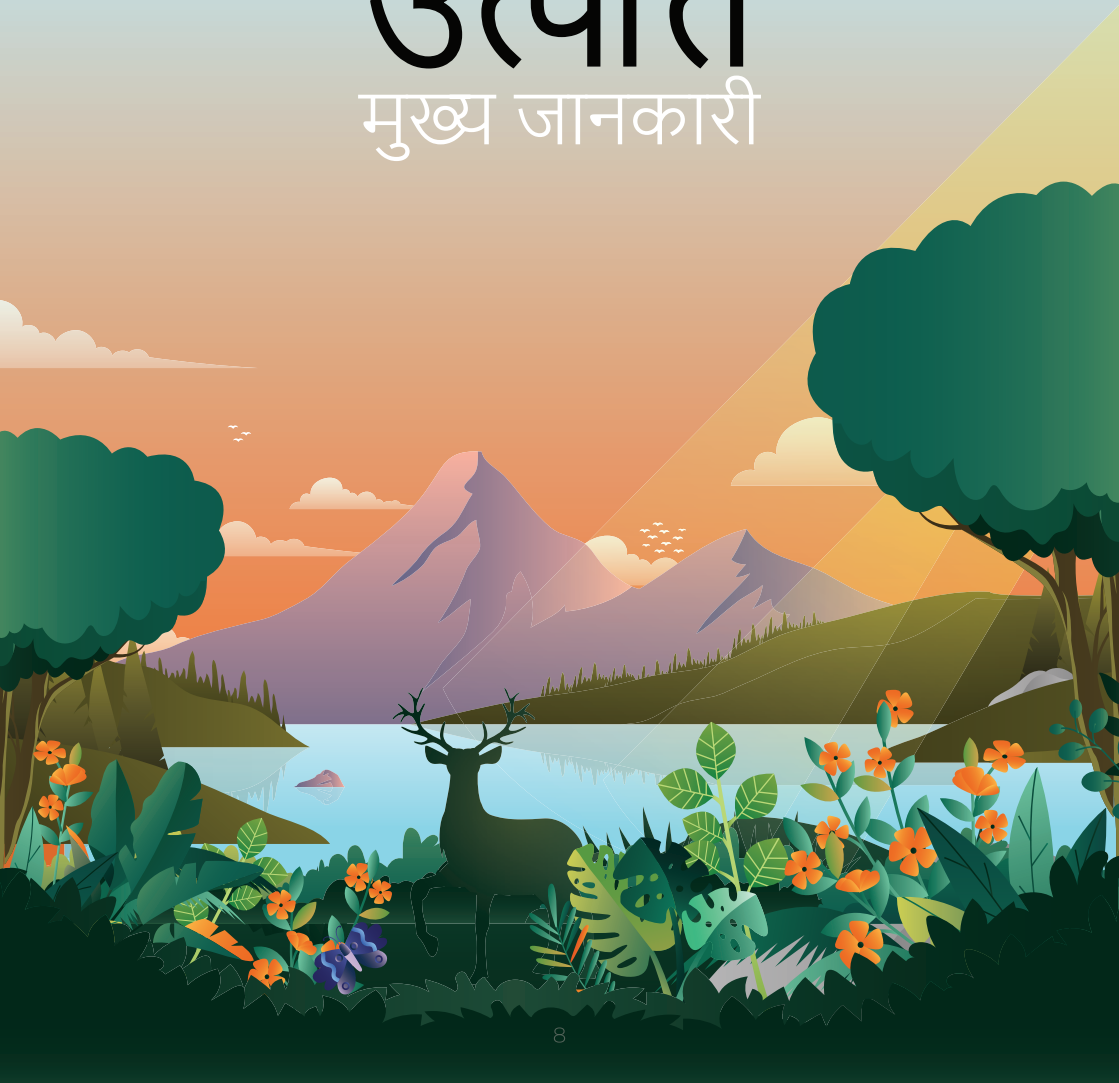
डॉ. जे वर्नन मैक्गी कहते हैं,

“ हम पवित्र आत्मा की सेवकाई के दिन में जी रहे हैं, अनुग्रह के दिन में, जब परमेश्वर की आत्मा मसीह की बातों को ग्रहण करती है और उन्हें हम पर प्रकट करती है। ”

THRU the BIBLE

उत्पत्ति

मुख्य जानकारी



डॉ. जे. वर्नन मैगी के अनुसार

2 बाइबल अध्ययन के तरीके

बाइबल का अध्ययन शुरू करने से पहले आपको इन दो तरीकों को ध्यान में रखना होगा।

पहला कदम है
दृश्य प्राप्त करना



दूरबीन जैसे

दूरबीनी दृष्टिकोण बाइबल अध्ययन का पहला चरण है, जो प्रत्येक पुस्तक के "**बड़े चित्र**" - उसके व्यापक विषय और संरचना - को समझने पर ध्यान केंद्रित करता है, उसके बाद अधिक विस्तृत विश्लेषण पर आगे बढ़ता है।

दूसरा कदम है
अध्ययन करना

सूक्ष्म दृष्टि से



सूक्ष्मदर्शी दृष्टिकोण दूसरे चरण के रूप में आता है, जिसमें प्रत्येक अध्याय में गहराई से उसके मुख्य विषय, मुख्य श्लोकों, महत्वपूर्ण शब्दों, मसीह के बारे में शिक्षाओं, पालन करने के आदेशों, दावा करने के वादों, तथा चिंतन और अनुप्रयोग के लिए नई सच्चाइयों का पता लगाया जाता है।

परमेश्वर
का अस्तित्व है

अनंतकाल
(हमेशा के लिए)

परमेश्वर समय में कैसे उपस्थित है?





पृथ्वी के दृष्टिकोण से समय को समझना।

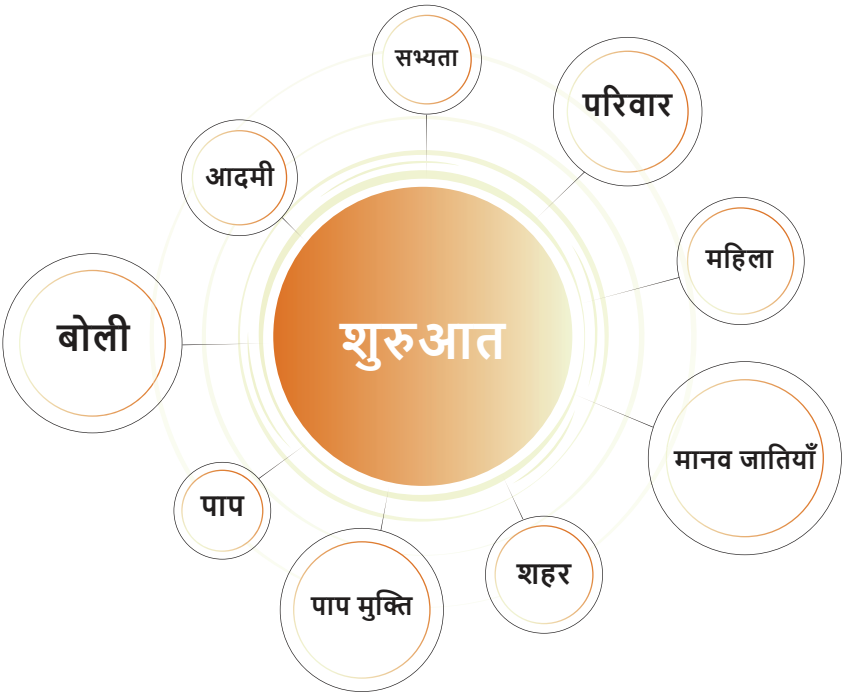
दूरबीनी दृष्टिकोण / पूरी तस्वीर

"उत्पत्ति बाइबल का "बीज-कथानक" है, और यहीं हमें हर चीज़ की शुरुआत, स्रोत और जन्म मिलता है।
उत्पत्ति की पुस्तक एक खूबसूरत गुलाब की कली की तरह है,
और यह बाइबल के बाकी हिस्सों में खुलती है।"

~ डॉ. जे वर्नन मैक्गी

Ⓐ **उत्पत्ति एक ऐसी पुस्तक है जो बताती है कि सब कुछ पहली बार कैसे शुरू हुआ।** (उत्पत्ति 1-11)

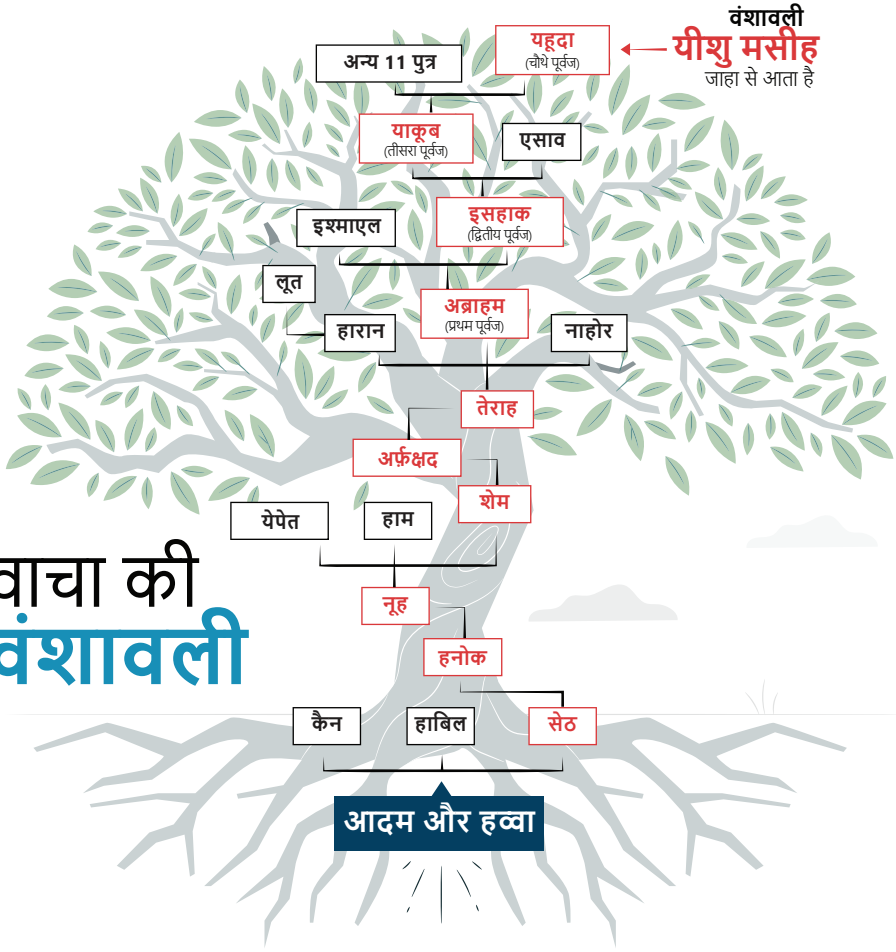
सृष्टि, पुरुष, स्त्री, विवाह, परिवार, पाप, मुक्ति, कार्य, सभ्यता, संस्कृति, हत्या, बलिदान, जातियाँ, भाषाएँ और शहर।



Ⓑ ऐसे विशिष्ट वाक्यांशों पर ध्यान दें जो बार-बार आते हैं।

उदाहरण के लिए, "**ये पीढ़ियाँ हैं**" एक **महत्वपूर्ण अभिव्यक्ति है जिसका बार-बार** प्रयोग किया जाता है क्योंकि उत्पत्ति की पुस्तक प्रारंभिक इतिहास के परिवारों का विवरण देती है। **यह हमारे लिए क्यों महत्वपूर्ण है क्योंकि हम उस मानव परिवार के सदस्य हैं जिसकी शुरुआत यहीं से होती है?**

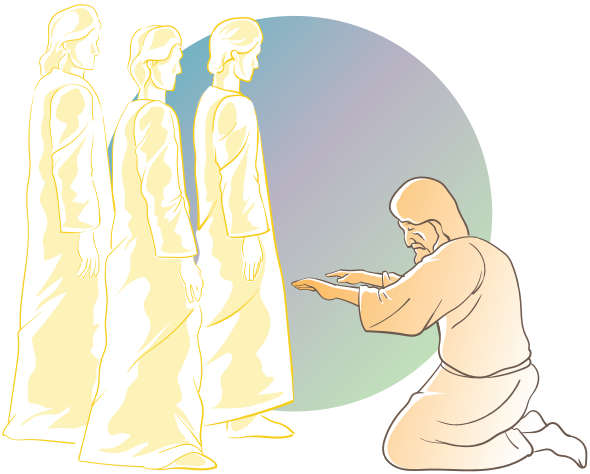
" ये हैं पीढ़ियाँ " ◀ उत्पत्ति 2:4-4:26, 5:1-6:8, 6:9-:29, 10:1-11:9, 11:10-26 में अभिव्यक्ति की घटनाओं के लिए अध्याय संदर्भ



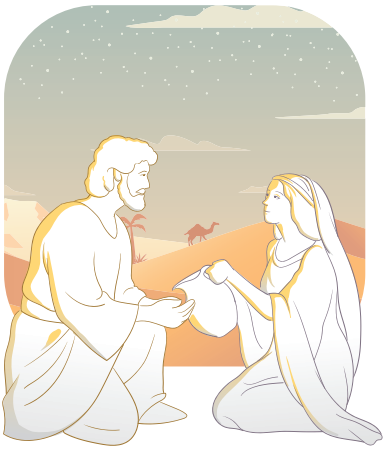
वाचा की वंशावली

© उत्पत्ति की पुस्तक में वर्णित कुछ ऐसे रोचक लोगों के बारे में जानें जिनसे परमेश्वर का संबंध था।

किसी ने इसे "**जीवनी की पुस्तक**" कहा है।
इसमें अब्राहम, इसहाक, याकूब, यूसुफ, फिरौन और यूसुफ के अलावा याकूब के ग्यारह पुत्र शामिल हैं। परमेश्वर अब्राहम, इसहाक, याकूब और यूसुफ के साथ-साथ उनसे जुड़े लोगों—लूत, अबीमेलेक, पोतीपर, पिलानेवाले और फिरौन—को निरंतर आशीर्वाद देता है।







Ⓓ पूर्वजों के सामने परमेश्वर का प्रकट होना



उत्पत्ति 17- परमेश्वर अब्राम के सामने (पहली बार शारीरिक रूप में) प्रकट होता है।

उत्पत्ति 26 - प्रभु ने इसहाक को दर्शन देकर कहा कि वह मिस्र न जाए।





उत्पत्ति 32 - परमेश्वर प्रकट होता है और सारी रात याकूब के साथ कुश्ती लड़ता है।

उत्पत्ति 46 - प्रभु केवल एक बार फिर इस्राएल (याकूब) से बात करता है ताकि उसे आश्वस्त कर सके कि मिस्र जाना परमेश्वर की योजना है और प्रभु उसके साथ रहेगा।



(E) परमेश्वर की वाचा

इस पुस्तक में आपको वाचा का उल्लेख मिलेगा -
एक ऐसा वादा जिसे केवल परमेश्वर ही पूरा कर सकता है।



उत्पत्ति 8 -
पूरी दुनिया में फिर कभी जलप्रलय
न आने की वाचा।



उत्पत्ति 15 -
अब्राहमिक वाचा

Ⓕ इस पुस्तक में वेदी प्रमुख है।

वेदियां

उत्पत्ति 8 - नूह ने अरारात पर्वत पर एक वेदी बनाई।

उत्पत्ति 12 - अब्राहम ने शेकेम में एक वेदी बनाई।

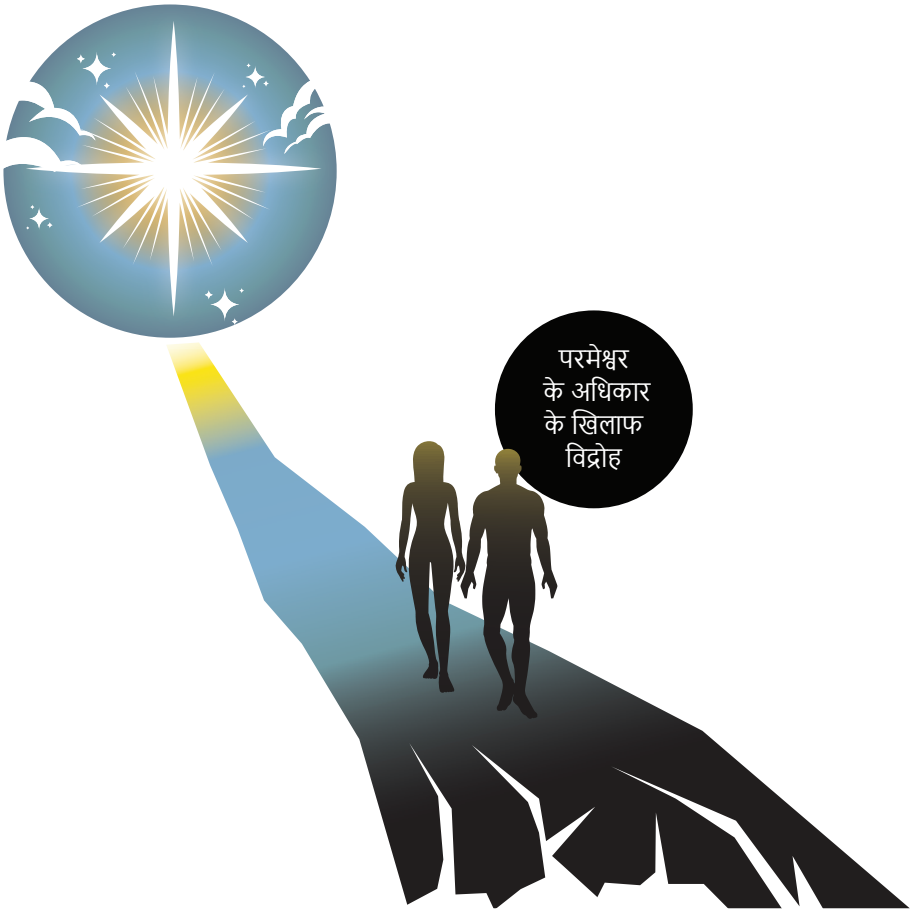
उत्पत्ति 26 - इसहाक ने बेर्शेबा में एक वेदी बनाई।

उत्पत्ति 33 - याकूब ने एल एलोहे इस्राएल में एक वेदी बनाई।

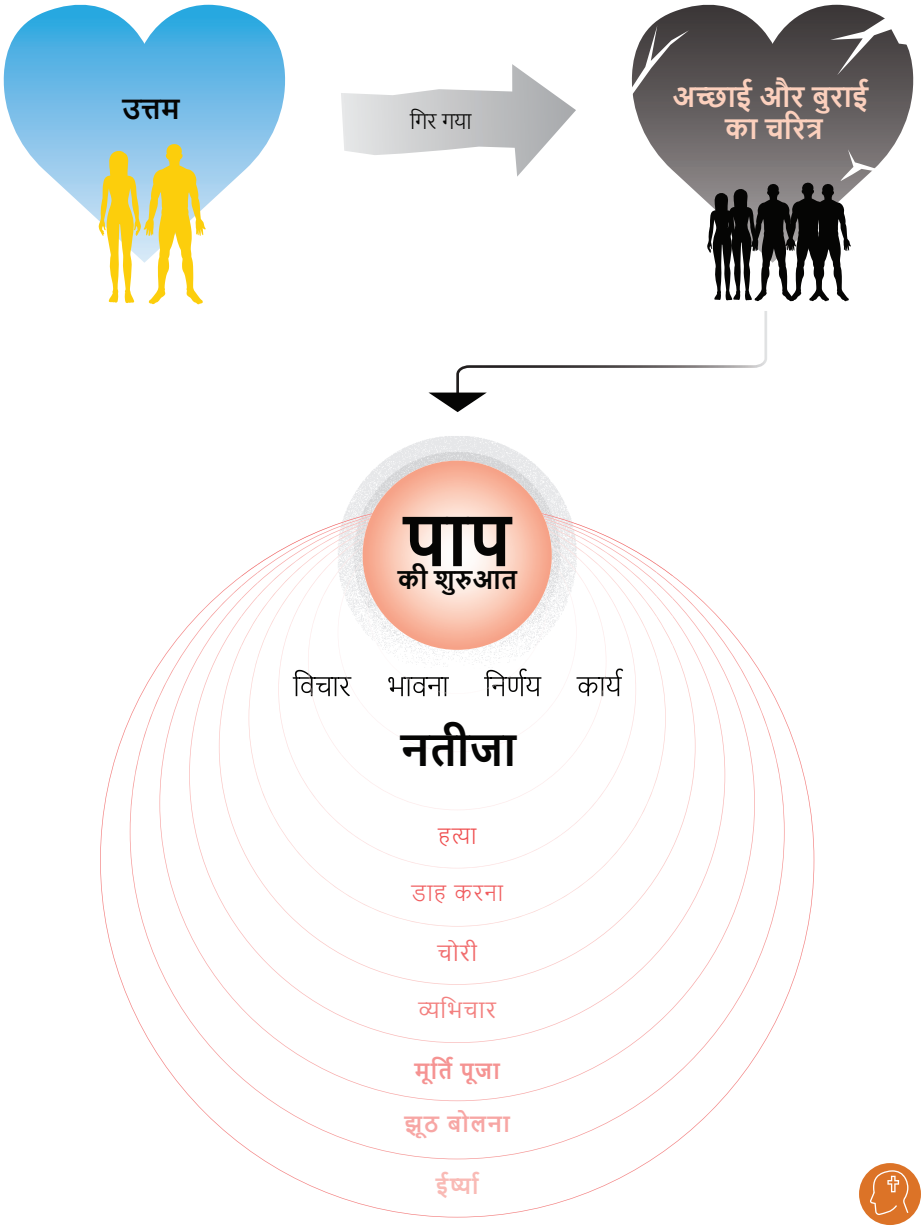


ⓖ सभी मानवीय समस्याओं का आधार

उत्पत्ति में पाप पर न्याय का उल्लेख है,
और पापों से मुक्ति के लिए परमेश्वर की व्यवस्था का भी।



(H) पापमय स्वभाव और पाप की उत्पत्ति



सूक्ष्मदर्शी दृष्टिकोण / गहराई से समझना

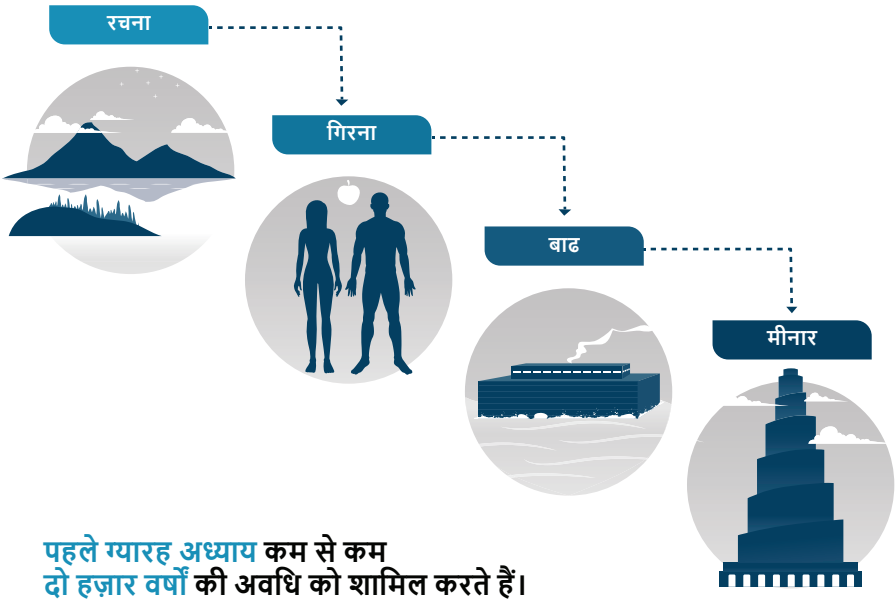
ध्यान दें कि उत्पत्ति की पुस्तक में दो भाग हैं

पहला भाग (उत्पत्ति 1-11)

उत्पत्ति के पहले भाग में सृष्टि के आरंभ का उल्लेख है।

पहला भाग सृष्टि से लेकर अब्राहम तक विस्तृत है।

पहला भाग उन प्रमुख विषयों से संबंधित है, जो आज भी विचारशील लोगों के मन को आकर्षित करते हैं:
सृष्टि, पतन, जलप्रलय, बाबेल का गुम्मट।



पहले ग्यारह अध्याय कम से कम दो हज़ार वर्षों की अवधि को शामिल करते हैं।

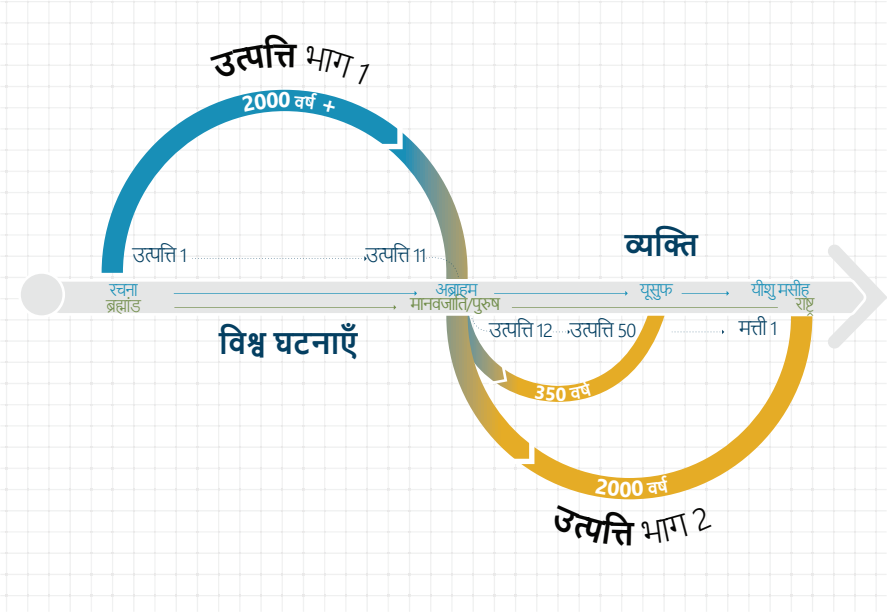
दूसरा भाग (उत्पत्ति 12-50)

अध्याय 12-50 में, हम अब्राहम के साथ परमेश्वर की वाचा को विभिन्न व्यक्तियों के माध्यम से पूरा होते हुए देखते हैं।

यह दूसरा भाग अब्राहम से यूसुफ तक फैला है और **प्रमुख व्यक्तियों पर केंद्रित है**: अब्राहम, विश्वासी पुरुष;
इसहाक, प्रिय पुत्र; याकूब, चुना हुआ और ताड़ना प्राप्त पुत्र; और यूसुफ, जिसने कष्ट सहे और बाद में महिमान्वित हुआ।

हालाँकि दूसरे भाग में **उनतीस अध्याय** हैं,
यह केवल **350 वर्षों** को कवर करता है। अब्राहम से लेकर ईसा मसीह के समय तक कुल **2000 वर्षों** का समय शामिल है।

पृथ्वी की समयरेखा
(उत्पत्ति से मत्ती तक)



आपको बहुत आनंद आएगा इस



को शुरू करने में, इस
पुस्तक का नाम है

उत्पत्ति

आपका नाम .....


उत्पत्ति
1:1

आपके अध्ययन के लिए

पवित्रशास्त्र: उत्पत्ति 1.1
पढ़ने का समय: 10-15 मिनट

प्रार्थना

इससे पहले हम आगे बढ़ें , आइए एक मिनट का समय लेकर परमेश्वर की अलौकिक रचना को समझने के लिए हमारे हृदय, मन,कानों और आँखों पर परमेश्वर के मार्गदर्शन को मांगे।

बाइबल पाठ

"आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की"
– उत्पत्ति 1 आयात 1



हर व्यक्ति इन प्रश्नों को अपने जीवन में कभी न कभी विचार करता है। इन प्रश्नों का उत्तर देने के लिए कई सिद्धान्त बताए गए है, परन्तु इसका **केवल एक ही उत्तर हो सकता है** ।

कुछ भी समझने के लिए उसकी शुरुआत **जानना आवश्यक है** , चाहे जीवन हो, संबंध हो, राष्ट्र हो या संसार हो। **शुरुआतों** से वर्तमान में क्या है उसके श्रोत और संभवतः उद्देश्य का प्रकाशन मिलता है।

वैज्ञानिक, धर्म शास्त्रि, और इतिहासकार **शुरुआत की जांच करते है समस्या का हल खोजने** या फिर जो मजबूत, सुंदर और पेचीदा है उसे समझाने के लिए।

परमेश्वर की रचना और मानवीय अनुमान

पवित्र बाइबल को उसकी शुरुआत पर खोलेंगे, उत्पत्ति की पुस्तक, **तो आप बाइबल, संसार और हर एक के जीवन के सत्या को खोजेंगे।**

उत्पत्ति उजागर करेगी जगत के और पुरुष, स्त्री और बच्चों को किए गए अकाल्पनिक बदलाव।

वह सब जो इन पन्नो को गंभीरता से देखते है वे स्वयं में रचनात्मक बदलाव की अपेक्षा करें **उसके शब्दों से जिसने** जीवन को बोलकर रचा ।

जैसे वैज्ञानिक जगत के ढांचे और सीमा को खोजते है , उत्पत्ति अध्याय 1 का **परम चरित्र** लगातार मनुष्य जो सीख सकते है उसको **आधिकारिक अर्थ देता है** ।

हलांकि बाइबल वैज्ञानिक तथ्यों के विरुद्ध नहीं है, परंतु परमेश्वर की इच्छा है की हर व्यक्ति परमेश्वर के और उसकी रचनात्मक कार्यों को विश्वास से ग्रहण।

इब्रानीयों 11: 3, "विश्वास ही से हम जान जाते हैं कि सारी सृष्टि की रचना परमेश्वर के वचन के द्वारा हुई है। पर यह नहीं कि जो कुछ देखने में आता है, वह देखी हुई वस्तुओं से बना हो।



कुछ विचारधाराएँ बताती है की संसार का निर्माण 100 करोड़ सालों पहला हुआ, वहीं कुछ और बताती है 200 करोड़, **और कुछ अनुमान लगाते है कई करोड़ सालों पहले । परन्तु किसी को भी पूर्ण पुष्टि नहीं है, और हमें याद रखना चाहिए की परमेश्वर की तरफ अनंतता है।**



जबकि हम समय को क्रमांक में देखते है (वर्तमान भूतकाल में डूबता है जैसे भविष्य वर्तमान मे), **अनंत परमेश्वर भूत,वर्तमान और भविष्य को एक अलौकिक क्षण में देखता है** । वह भूत और भविष्य को एक सामान्य चमक से देखता है की मानो पूरा समय ही उसके सामने बिछा दिया गया हो। पतरस प्रेरित 2 पतरस 3:8 में लिखता है , ' 'हे प्रिय, यह बात तुम से छिपी न रहे कि प्रभु के यहाँ एक दिन हज़ार वर्ष के बराबर है, और हज़ार वर्ष एक दिन के बराबर है। '

[1] जोनाथन एडवर्ड्स की कृतियाँ (एडिनबर्ग, स्कॉटलैंड: बैनर ऑफ़ ट्रुथ ट्रस्ट, 1974), 172

भौतिक शास्त्री डॉ. अल्बर्ट आइन्सटाइन का महान निरीक्षण था ये **पहचानना की दो वास्तविकताएँ, पदार्थ और ऊर्जा, आपस में गूँथे हुए है**। ऊर्जा से पदार्थ बनाया जा सकता है।
जो दिखता है वह बना है जिसे हम देख नहीं सकते उससे (इब्रानीयों 11:3)।

दूसरी तरफ , **बहुत से विचार है संसार की शुरुआत कैसे हुई बताने के**, परन्तु सभी का **निचोड़** इन ही दोनों श्रेणियों में होता है
कुछ विशेष विचारधाराएँ जो बाइबल के बयान को नकारती है वह है:

डारविनियन एवल्यूशन थियरि

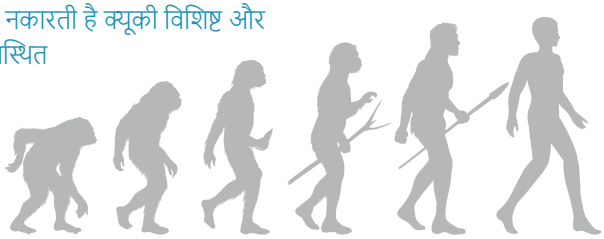
एक है **रचना**

और दूसरा है **अनुमान**

उत्पत्ति के इस व्यापक रूप से स्वीकृत सिद्धांत में यह माना गया है कि जटिल जीवन रूपों का विकास हुआ

डार्विन का विकासवाद सिद्धांत

बहुत से लोगो द्वारा ग्रहण की गयी यह आरंभ की विचारधारा बताती है की **जटिल जीवन विकसित हुआ है साधारण जीवन रूपों से** जब प्रकृति में अव्यवस्थित बदलाव हुए।
फिर, उनमें से ज़्यादा सक्षम रूप "प्रकृति द्वारा चुने गए" बदलाव जीवित रहे।
यह विचारधारा एक रचयिता को नकारती है क्यूकी विशिष्ट और विकासशील बदलावों को अव्यवस्थित घटनाओं पर आधारित किया जाता है।



थीस्टिक एवल्यूशन थियरि

थिस्टिक थियरि के समर्थक विश्वास करते है की परमेश्वर ने पदार्थ और जीवन को रचा है । फिर उसने उन प्रक्रियाओं का निर्देश किया जो थियरि ऑफ एवल्यूशन में वर्णित की गई है । हालांकि, यह दृष्टिकोण अव्यवस्थित या "प्रकृति द्वारा चुनाव" के सिद्धान्त को नहीं मानता।

डिस्टिक एवल्यूशन थियरि

यह विचार मानता है की **परमेश्वर ने जगत को रचा है और उसपर सर्व सिद्ध है** परन्तु विकासवादी प्रक्रिया में तात्कालिक सम्मिलित नहीं है ।

इंटेलिजेंट डिज़ाइन थियरि (आई डी)

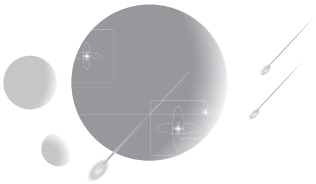
इंटेलिजेंट डिज़ाइन दृष्टिकोण **मानता है की विश्व के कुछ ढांचे, संरचना, और क्रियाएँ केवल प्राकृतिक कारणों या ताकतों से ही निर्मित नहीं हो सकते**। वैज्ञानिक जो इस विचार को मानते है उन ढांचों का निरीक्षण करके प्राकृतिक संसार को समझते है जोकि एक रचयिता की ओर इशारा करता है। वह लोग जो परमेश्वर द्वारा जगत की रचना पर विश्वास करते है वह कभी-कभी अपने को इस विचारधारा से जोड़ते है और समान सबूत प्रयोग करते है अपने पक्ष के लिए, **"इंटेलिजेंट डिज़ाइन"** बाइबल पर आधारित रचना के विश्वास से भिन्न है।

बिग बैंग थियरि

यह विचार बताता है की जगत की शुरुआत करोड़ों साल पहले एक विशालकाय विस्फोट द्वारा हुई। जबकि यह विज्ञान पर आधारित प्रक्रिया को समझाता है, परन्तु स्वाभाविक रूप से अलौकिक रचना के विचार को नहीं नकारता बल्कि किस प्रकार परमेश्वर ने रचना को शुरू किया उसका एक विवरण लिया जा सकता है।

स्टैडि स्टेट थियरि

यह विचार **प्रस्तावित करता है की जगत हमेशा से ही अस्तित्व में था और रचना का एक स्थायी स्तर है**, बाइबल के विशिष्ट शुरुआत के बयान से भिन्न।





बाइबल शिक्षक डॉ. वेर्नोन मैंक् गी कहते है,

" तीन क्षेत्र है जहां विकास नहीं जा सकता :
कुछ नहीं से कुछ होने तक के फासले को भर नहीं सकता, कुछ होने से जीवन तक, और जीवन से आत्मसंचेत मानविए जीवन एक स्वेछा के साथ "

बाइबल क्या शिक्षा देती है?

A एक रचयिता है

बाइबल बताती है ,"**आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की**"। यह आयत, साधारण रूप से, समझाती है परमेश्वर ने संपूर्ण जगत की रचना की। **यूहन्ना 1: 1 से 3**, रचयिता की एक और झलक मिलती है। "आदि में वचन था, वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था। वह आदि में परमेश्वर के साथ था। सब कुछ उसके द्वारा बनाया गया, और जो कुछ बना है उसके बिना नहीं बना है। **यह यीशु मसीह की ओर संकेत करता है, जो सिद्ध करता है की अलौकिक बुद्धिमत्ता बाकी सबसे पहले अस्तित्व में था। यही अलौकिक बुद्धिमत्ता जीवन की शुरुआत और जीवित वस्तुओं के अस्तित्व के लिए ज़िम्मेदार है।**

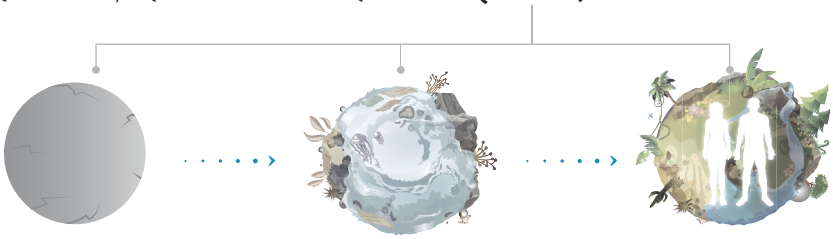
B रचयिता और प्राणी के बीच अंतर

इब्रानी भाषा परमेश्वर के रचनात्मक कार्य को समझाने के लिए एक विशेष शब्द का प्रयोग करती है : **बारा, (**בָּרָא**)**, जोकि अंग्रेज़ी बाइबल में अनुवादित है "रचा हुआ "। **बारा** का तात्पर्य है कुछ नहीं से कुछ रचने की **परमेश्वर की अद्भुत ताकत** को।

रचना का विषय इतना विशाल है की उत्पत्ति अध्याय 1 **पाँच अलग-अलग शब्दों** का प्रयोग करता है इसे समझने के लिए। वह शब्द है " **रचा हुआ , तैयार किया, बनाया हुआ, खोजा हुआ, गठित हुआ**।
इसमें से 4 शब्द मनुष्य के रचे हुए कार्य के लिए भि प्रयोग होते है । इनका तात्पर्य है मौजूदा सामग्री से कुछ बनाना।

लेकिन, **बारा शब्द (कुछ नहीं से कुछ रचने की परमेश्वर की अद्भुत ताकत) का उत्पत्ति अध्याय 1 में तीन बार प्रयोग हुआ है।**

हर मामले में, यह शब्द संकेत करता है **रचना के इन तीन दायेरों को**।



पदार्थ का दायरा
(उत्पत्ति 1:1)

जीवन का दायरा
(उत्पत्ति 1:21)

मनुष्यता का दायरा
(उत्पत्ति 1:27)

C "स्वर्ग और पृथ्वी को किसने बनाया?" इसका एकमात्र जवाब

इसकी शुरुआत होती है विश्वास से और **यह ग्रहण करके जो परमेश्वर ने महान वाक्य को अपने वचन की शुरुआत में कहा है**:

"आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की"

समझने के लिए आवश्यक है विश्वास करना, **जैसा इब्रानीयों 11:3 बताती है: 'विश्वास ही से हम जान जाते हैं कि सारी सृष्टि की रचना परमेश्वर के वचन के द्वारा हुई है। पर यह नहीं कि जो कुछ देखने में आता है, वह देखी हुई वस्तुओं से बना हो। '**

D परमेश्वर ने जगत क्यों बनाया ?

परमेश्वर ने जगत क्यू बनाया यह समझने से पहले हमें **जानना है कि परमेश्वर कौन है**। वह सभी की शुरुआत और अंत है ।

परमेश्वर हमें बताते हैं कि **उन्होंने जगत इसलिए बनाया क्योंकि उन्हें इससे खुशी मिलती है** (प्रकाशितवाक्य 4:11)।

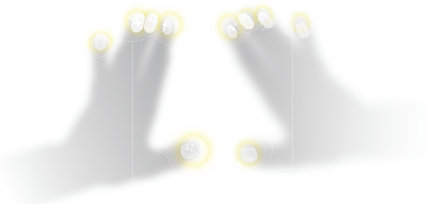
परमेश्वर ने हमें **अपनी ताकत और विशालता को दर्शाने के लिए बनाया है**। जैसे यशायह 43:7 कहता है,"जिसको मैं ने अपनी महिमा के लिये सृजा, जिसको मैं ने रचा और बनाया है।"

परमेश्वर **मनुष्य से एक संबंध चाहता था**, ताकि हम चुनाव कर सके।
वह हमें रोबोट भी बना सकता था कि हम जबरन उसकी आराधना करें।
परन्तु वह चाहता था की हम स्वतन्त्रता से चुनाव कर उससे प्रेम करें और उसकी महिमा दर्शाएँ।

वचन के साथ कार्य का भाग यहाँ से शुरू कर सकते है

1. **गहराई से मनन** दूरबीन रूपी मनन

हम पश्च-सत्य युग में रहते हैं। आइए समय लेकर हमारे चारों तरफ जो कुछ रचा हुआ है उसका अवलोकन और अध्ययन करें। हम परमेश्वर की अनंत कालीन समर्थ और अलौकिक सार को समझ सकते है, जो कि स्पष्ट है जगत की शुरुआत को समझा जा सकता है रची हुई वस्तुओं के द्वारा। परमेश्वर की अलौकिक उंगली की छाप को अनदेखा करना नामुमकिन। दुर्भाग्य वश, संसार की दी हुई विचारधारा हमारी सोच को गिरा सकती है और हमें घमंडी बनाती है जो सोचते है की उन्हें बहुत कुछ मालूम है जबकि कुछ नहीं पता।



हमें उसके महान शब्द को ग्रहण करना है जो उसके वचन का आरंभ करते। 'आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की रचना की।'

उत्पत्ति 1:1 की अप्रत्यक्ष आज्ञा है परमेश्वर को पहचानो और सृष्टिकर्ता के रूप में आराधना करो। यह स्वीकार करने से विश्वासी जीते है उसके समर्थ के आश्चर्य से और अपने जीवन को उसके उद्देश्य और अलौकिक आज्ञा के अनुसार चलते है ।

लागू करें -

आप उत्पत्ति 1:1 की अप्रत्यक्ष आज्ञा का प्रति उत्तर कैसे देना चाहेंगे (ऊपर बोल्ड में उजागर की गई है)? (भजन संहिता 33:6 से 9 ; भजन संहिता 96:6 से 8, भजन संहित 8:1;3-4। भजन संहिता 19)
"अंतर्निहित कमांड" के लिए हाइलाइट किए गए टेक्स्ट बॉक्स देखें।

2. गहराई से मनन (दूरबीन रूपी मनन)

जबकि उत्पत्ति 1:1 प्रत्यक्ष रूप से मसीह का बयान नहीं करता, नया नियम **पुष्टि करता है की मसीह उपस्थित और सक्रिय थे सृष्टि की रचना में**। यूहन्ना 1:1-3 बताता है, "आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था। यही आदि में परमेश्वर के साथ था। सब कुछ उसी के द्वारा उत्पन्न हुआ, और जो कुछ उत्पन्न हुआ है उसमें से कोई भी वस्तु उसके बिना उत्पन्न नहीं हुई ।" **यह इस सत्य को पुष्ट करता है कि मसीह ईश्वरीय वचन के रूप में त्रिएक सृष्टि कथा का अभिन्न अंग है** "।

मसीह और सृष्टि से संबन्धित अपने इन पदों से क्या सीखा उसको लिखें:

- यूहनना 1:1-3 - _____
- कुलुस्सियों 1:15-19 - _____
- कुलुस्सियों 2:3 - _____
- कुलुस्सियों 2:9 - _____
- इब्रानीयों 1:3 - _____

लागू करें

यीशु मसीह के बारे में लिखे गए अंशों से सीखना **आपको अपने विश्वास के रचयिता और पूर्णकर्ता यीशु की ओर देखकर जीवन का सामना करने में कैसे मदद करता है**?

3. **सुसज्जित करना** दूसरों के मार्गदर्शन के लिए

- सच्ची बुद्धि शुरू होती है **पहचानने और आराधना करने से की परमेश्वर संपूर्ण जगत का सृष्टिकर्ता है** (नीतिवाचन 9:10)। स्वयं के भीतर; **सभी को अपने सृष्टिकर्ता को पहचानना है** , सिवाय इसके की वह इस ज्ञान को दबा दें(रोमियों 1:18-21)।

- **परमेश्वर को सृष्टिकर्ता के रूप में स्वीकार करना** और आदर करना वचन से सीधा निर्देशित है (उत्पत्ति 1:1)।

- विश्वासी उनकी शक्ति के प्रति **श्रद्धा से भरे रहते हैं और इस मान्यता के परिणामस्वरूप अपने जीवन को उनकी दिव्य व्यवस्था और उद्देश्य के अनुरूप** ढाल लेते हैं।

फिर भी, मानवीय शुरुआत की विचारधाराओं ने बहुतों को बाधित किया परमेश्वर को **सृष्टिकर्ता** के रूप में पहचानने से । कौन उनकी सहायता या मार्गदर्शन करेगा अपने **सृष्टिकर्ता** को पहचानने में?

लागू करना

इस अध्ययन से जो भी आपने सीखा , आप किसी को समझाने की कैसे तैयारी करेंगे जो यह नहीं जनता की परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की कैसे?

अनंत कालीन ज्ञान

अतिरिक्त पढ़ने के लिए

जैनिसिस (उत्पत्ति) एक यूनानी शब्द है जिसका अर्थ है "**शुरुआत**" जो की शायद यूनानी शब्द "**जनरेशन्स**" (पीढ़ी) से लिया गया है । सैपटूआजिंट, तीसरी शताब्दी ई.पू में इबरानी वचन का यूनानी अनुवाद ने उत्पत्ति को "जेनिसिस" नाम दिया। जेनिसिस (उत्पत्ति) शुरुआतों की पुस्तक है। यह संसार के शुरू होने से भी पहले का बयान करती है, जब **परमेश्वर पिता ने** (प्रेरितों 4:24), **अपने पुत्र के द्वारा** (कुलुस्सियों 1:16) और जीवन देने वाली **पवित्र आत्मा** के काम के द्वारा(उत्पत्ति 1:2) अपने रचनात्मक कार्य को शुरू किया।

परमेश्वर का अलौकिक चरित्र है उसकी सर्वसिद्धता। **सर्वसिद्ध से तात्पर्य है एक शासक**, राजा या परमेश्वर और वचन निरंतर बताता है की परमेश्वर सर्वव्यापी शासक है। उसका प्रचलित नाम इबरानी में "**याहवेह**", ज़्यादातर अनुवादित है "परमेश्वर" में हिन्दी और अँग्रेजी बाइबल में।

"परमेश्वर" शब्द **7000 बार** परमेश्वर के नाम के रूप में मिलता है , विशेष रूप में यीशु मसीह के नाम में। इसलिए , परमेश्वर की सर्वसिद्धता को समझने के लिए उसके प्रभुत्व की चर्चा करना होगा – जो है **परमेश्वर की भलाई** को समझना, वो चरित्र जो उसे परमेश्वर बनाते है। बाइबल पर आधारित **अलौकिक सर्वसिद्धता या प्रभुता के मुख्य तत्व है परमेश्वर का नियंत्रण, अधिकार, और उसकी उपस्थित है। वह सर्वज्ञानी, सर्वशक्तिमान और सर्वव्यापी है**।

लागू करना

परमेश्वर के सर्वोच्च अधिकार के अधीन जीवन जीने के बारे में आप क्या सोचते और महसूस करते हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

परमेश्वर के अधिकार के अधीन रहना हमारे लिए सर्वोत्तम योजना क्यों है? .....

.....

.....

.....

.....

.....

आपका निष्कर्ष

'**परमेश्वर की बुद्धि**' को अपने जीवन में समाहित करना।

मैक्गी का उद्धरण



"वचन का उद्देश्य है धार्मिकता में निर्देश देना (2. तिमु 3:16-17). यह इसलिए नहीं लिखा गया की आपको भूविज्ञान और जीवविज्ञान सिखाये। यह लिखा गया की मनुष्य से परमेश्वर का संबंध दिखाये, और मनुष्य के लिए परमेश्वर की आवश्यकता और वह क्या कर सकता है बचने के लिए." "


उत्पत्ति
1:2 - 31

आपके अध्ययन के लिए

पवित्र शास्त्र : उत्पत्ति 1:2-25
पढ़ने का समय : 10-15 मिनट

प्रार्थना

आगे बढ़ने से पहले, हम एक मिनट लें और परमेश्वर से प्रार्थना करें कि वह हमारे हृदय, मन, कान और आँखों को मार्गदर्शन करे, ताकि हम उसकी दिव्य योजना को समझ सकें।

बाइबल का पद

पृथ्वी बेडौल और सुनसान पड़ी थी, और गहरे जल के ऊपर अंधियारा था; तथा परमेश्वर का आत्मा जल के ऊपर मण्डराता था।

- उत्पत्ति 1:2

1 बाइबल क्या सिखाती है ?

डॉ. मैक्गी मानते हैं कि उत्पत्ति 1:1 और 1:2 के बीच एक बड़ी दुर्घटना घटी थी।

बनि आकार के
(तोहू)
मतलब
बर्बादी, रिक्तता, अराजकता
हिब्रानी भाषा में

खालीपन
(बोहू)
मतलब
खालीपन, उजाड़
हिब्रू भाषा में

यशायाह 48:15 में लिखा है : "**परमेश्वर ने पृथ्वी को व्यर्थ (तोहू) नहीं बनाया।**" इसका अर्थ है कि परमेश्वर ने पृथ्वी को **संपूर्ण** और **रहने योग्य** बनाया था, लेकिन किसी घटना ने उसे **उजाड़** कर दिया।

जहाँ **परमेश्वर नहीं**, वहाँ **अंधेरा** है।

2

उत्पत्ति 1:2 **में लिखा है, "गहरे जल के ऊपर अंधकार था।"**

डॉ. मैक्गी कहते हैं कि अंधकार का मतलब है – **परमेश्वर की मौजूदगी न होना**। जब परमेश्वर नहीं होता, तो वहाँ बर्बादी और खालीपन रह जाता है।

लूसिफ़र का गिरना और आदम से पहले का समय

3

डॉ. मैक्गी मानते हैं कि शायद **आदम से पहले** भी पृथ्वी पर कुछ और लोग या जीव रहते थे।

डॉ. मैक्गी इस आपदा को **लूसिफ़र (शैतान) के गिरने** से जोड़ते हैं।

शैतान के विद्रोह के कारण **पूरी दुनिया** को भी दुख उठाना पड़ा होगा।

पवित्र आत्मा का काम- **रचना पर गहरा विचार करना**

4

उत्पत्ति 1:2 -**"परमेश्वर का आत्मा पानी के ऊपर मंडरा रहा था।"**

""**मंडराना**" का मतलब है – **देखभाल करना**,
जैसे एक मुर्गी अपने चूजों की रक्षा करती है।"

**पवित्र आत्मा की मौजुदगी
ने नई रचना शुरू की।**

आत्मिक उपयोग–पवित्र आत्मा के माध्यम से नया जन्म

5

डॉ. मैक्गी कहते हैं कि जैसे पवित्र आत्मा ने पृथ्वी को फिर से बनाया, वैसे ही वह हमारे **आत्मिक नए जन्म** का कारण भी है।

योहन 3:5 –
"जब तक कोई मनुष्य जल और आत्मा से न जन्मे तो वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता।"

पानी = परमेश्वर का वचन
आत्मा = पवित्र आत्मा

जैसे पवित्र आत्मा ने **पृथ्वी बनाई,**
वैसे ही वह हमें भी नया जीवन देता है।

बीच की कड़ी
उत्पत्ति 1:2
और
उद्धार

3 चरण **पृथ्वी के निर्माण** के

डॉ. मैकगी **उत्पत्ति 1:1-31 में तीन अलग-अलग चरण देखते हैं**

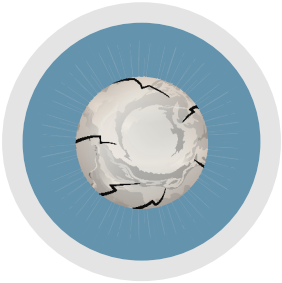
चरण 1



संपूर्ण जगत की रचना

परमेश्वर ने सब कुछ बनाया
(उत्पत्ति 1:1)

चरण 2



पृथ्वी का कंपन

एक आपदा ने
पृथ्वी को "बिना आकार और
शून्य" छोड़ दिया (उत्पत्ति 1:2)

चरण 3



पृथ्वी का निर्माण

परमेश्वर ने छह दिनों में पृथ्वी का
पुनर्निर्माण और संरचना की
(उत्पत्ति 1:3-31)
(निर्गमन 20:11)

6 दिन **दिव्य व्यवस्था और रचना** के

डॉ. मैकगी इस बात पर प्रकाश डालते हैं कि सृष्टि कैसे **व्यवस्था, प्रगति, तत्परता और पूर्णता** दर्शाती है।

रचना करने के वास्तविक दिन थे 24 दिन घंटे

डॉ. मैक्गी पुष्टि करते हैं कि **सृष्टि के दिन 24 घंटे के दिन थे**

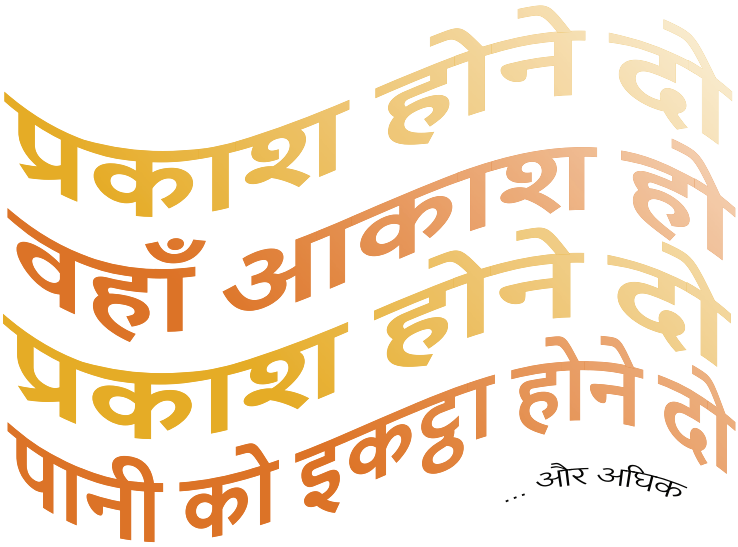
(निर्गमन 20:11)

वे कहते हैं, **"मुझे नहीं लगता कि इससे और कुछ प्राप्त किया जा सकता है।"**

यह उन व्याख्याओं का खंडन करता है जो इन्हें लंबे **युगों या समयावधियों के रूप में देखती हैं।**

'उजियाला हो' कथन-
सृष्टि के लिए परमेश्वर की आज्ञाएँ

उत्पत्ति 1, **"हो" कथनों** को (10 बार) दर्ज करता है:



सृष्टि के दस
दिव्य आज्ञाएँ

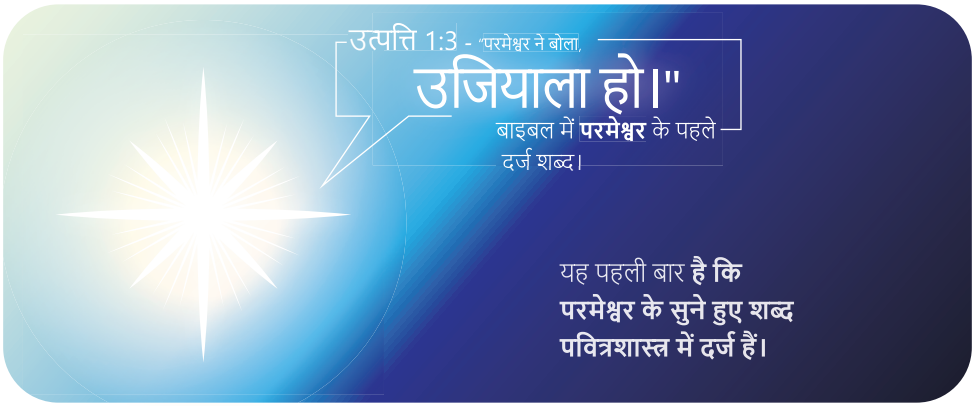
सृष्टि के
दस आज्ञाएँ

इनकी तुलना दस आज्ञाओं से की जाती है,और इन्हें **दस दिव्य आज्ञाएँ** कहा जाता है।

यह परमेश्वर के पूर्ण अधिकार पर ज़ोर देता **है**
अपने बोले हुए वचन के माध्यम से संसार की रचना करने में।

6 दिन दिव्य व्यवस्था और रचना के

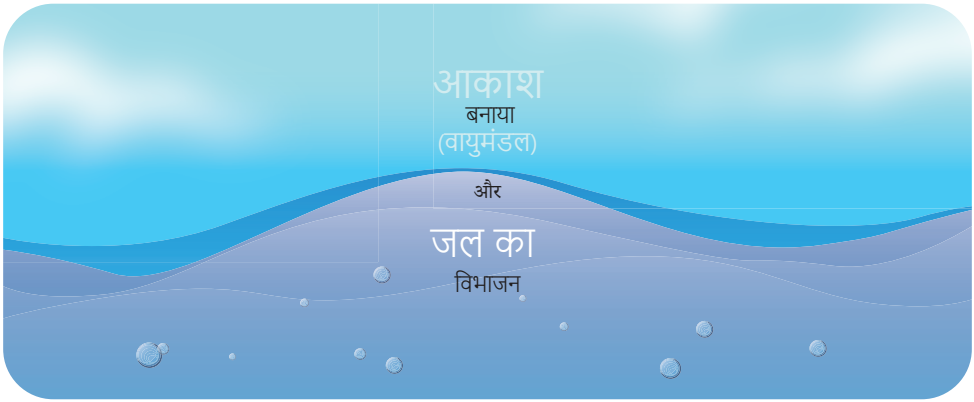
दिन 1 | प्रकाश
(उत्पत्ति 1:3-5)



डॉ. मैकगी **अराजकता से व्यवस्था लाने के लिए परमेश्वर के बोलने के महत्व पर प्रकाश डालते हैं।**

6 दिन दिव्य व्यवस्था और रचना के

दिन 2 | वायुमंडल
(उत्पत्ति 1:6-8)



बाइबल में तीन स्वर्ग



वायुमंडल
(जहाँ पक्षी उड़ते हैं)



अंतरिक्ष
(तारे)



स्वर्ग
(ईश्वर का निवास)

6 दिन दिव्य व्यवस्था और रचना के

दिन 3 | शुष्क भूमि और वनस्पति जीवन

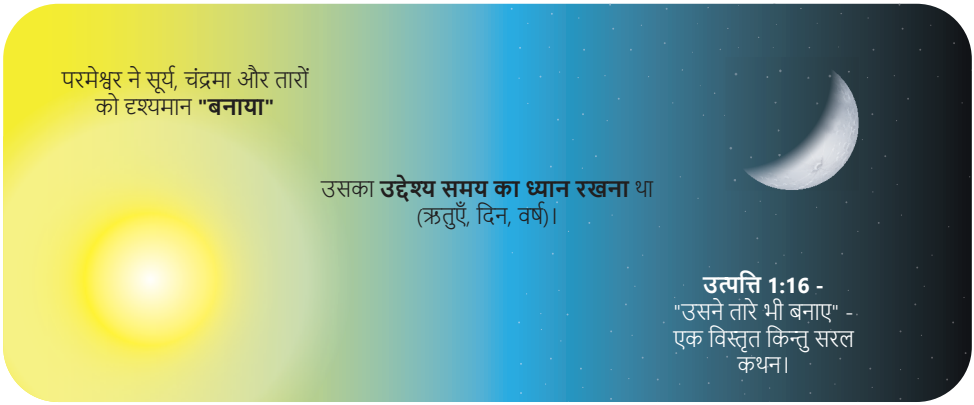
(उत्पत्ति 1:9-13)



6 दिन दिव्य व्यवस्था और रचना के

दिन 4 | सूर्य,चंद्रमा और तारे

(उत्पत्ति 1:14-19)



6 दिन दिव्य व्यवस्था और रचना के

दिन 5 | समुद्री और उड़ने वाले जीव

(उत्पत्ति 1:20-23)



6 दिन दिव्य व्यवस्था और रचना के

दिन 6 | स्थलीय पशु और मनुष्य

(उत्पत्ति 1:24-31)



मनुष्य की रचना
एक अनोखी घटना

उत्पत्ति 1:26-27 - परमेश्वर ने कहा, "हम मनुष्य को अपने स्वरूप में बनाएँ।"

मनुष्य परमेश्वर के स्वरूप में बनाया गया है

शास्त्र के सबसे महान कथनों में से एक।

"परमेश्वर के स्वरूप" का क्या अर्थ है?



मनुष्य त्रिएक है
(आत्मा, प्राण और शरीर
- 1 थिस्सलुनीकियों 5:23)

मनुष्य में
आत्म-चेतना,
स्वतंत्र इच्छाशक्ति और
नैतिक
ज़िम्मेदारी होती है।

मनुष्य एक **अद्वितीय**
व्यक्तित्व है।

"इसलिए परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप में बनाया"

रचना के लिए इब्रानी शब्द

אָרָב

(बारा)

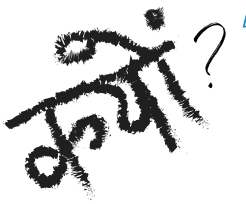
उत्पत्ति 1 में **तीन बार** प्रयुक्त हुआ है



उत्पत्ति 1:1 **शारिक जगत** की रचना की	**उत्पत्ति 1:21** **जीवन** की रचना	**उत्पत्ति 1:27** **मनुष्य** की रचना

मनुष्य **कुछ नया था, जानवरों से अलग।**

परमेश्वर केवल **मनुष्य की रचना** के बारे में **विस्तृत जानकारी** देता है, ब्रह्मांड के बारे में नहीं।



क्योंकि **परमेश्वर चाहता है कि मनुष्य अपने मूल, अपने रचयिता के बारे में जाने,** न कि **पूरे ब्रह्मांड की** व्याख्या करे।

परमेश्वर ने उन्हें नर और नारी बनाया

पुरुष और नारी की रचना कैसे हुई, इसका विवरण उत्पत्ति 2 में दिया गया है।

ब्रह्मांड की रचना का केवल संक्षिप्त उल्लेख किया गया है,
लेकिन **मनुष्य की रचना पर ज़ोर दिया गया है।**

इब्रानियों 11:3

सृष्टि "शून्य से" बनाई गई थी
(बाहर से कुछ नहीं)

परमेश्वर का आशीर्वाद और गुणा करने की आज्ञा

उत्पत्ति 1:28
और परमेश्वर ने उनको आशीष दी; और उनसे कहा, "फूलो-फलो, और पृथ्वी में भर जाओ, और उसको अपने वश में कर लो; और समुद्र की मछलियों, तथा आकाश के पक्षियों, और पृथ्वी पर रेंगनेवाले सब जन्तुओं पर अधिकार रखो।"

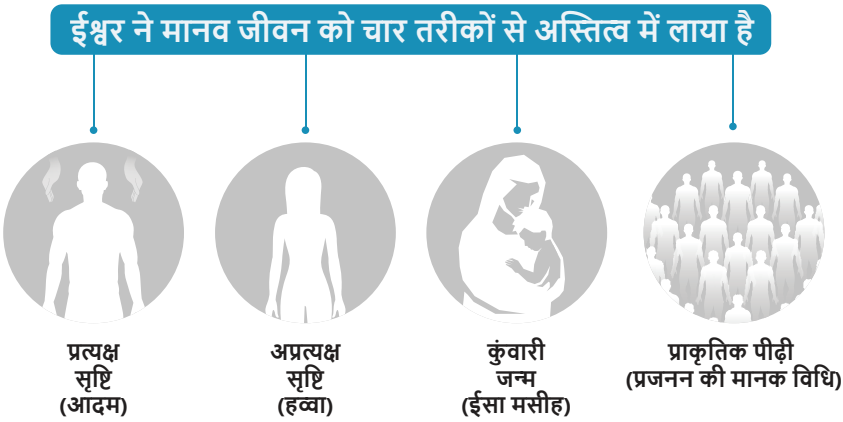


परमेश्वर ने सृष्टि में **मानवजाति को एक विशेष भूमिका दी थी।**

यौन संबंध और प्रजनन परमेश्वर द्वारा ही रचे गए थे - ये कोई नई खोज नहीं हैं।

समाज ने कामुकता को **विकृत और पतित** कर दिया है, लेकिन परमेश्वर का उद्देश्य इसे शुद्ध और सुंदर बनाना था।

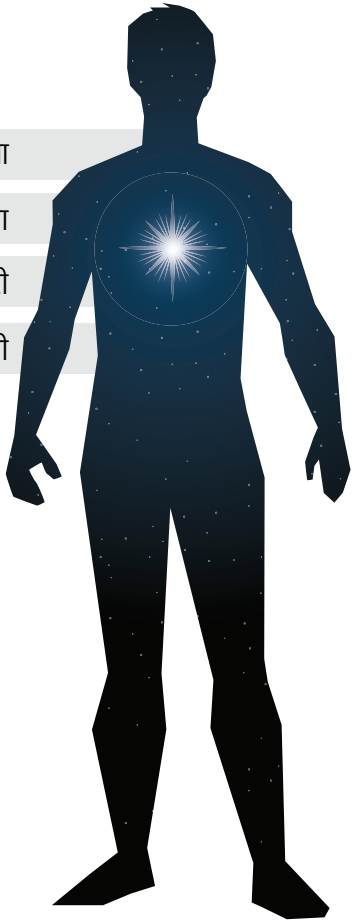
परमेश्वर ने मानव जीवन को चार तरीकों से अस्तित्व में लाया है



ईश्वर के स्वरूप में मनुष्य की नैतिक ज़िम्मेदारी

ईश्वर ने **मनुष्य को अपने स्वरूप में बनाया**, उसे

- आत्म-चेतना
- स्वतंत्र इच्छा
- नैतिक ज़िम्मेदारी
- स्वामी ईश्वर के प्रति जवाबदेही



"पृथ्वी को पुनः भरने" का अर्थ

"पुनः भरने" शब्द से पता चलता है कि
आदम से पहले पृथ्वी पर लोग रहते थे।

यह आदम-पूर्व
दुनिया के नष्ट होने के विचार का समर्थन करता है।

मनुष्य की भूमिका: पृथ्वी पर अधिकार करना

परमेश्वर ने **मनुष्य को पृथ्वी पर अधिकार** करने के लिए कहा



इसमें शामिल है

वैज्ञानिक खोज (नीतिवचन 25:2: परमेश्वर की महिमा, गुप्त रखने में है, परन्तु राजाओं की महिमा गुप्त बात के पता लगाने से होती है।")

अन्वेषण और सीखना

मनुष्य को परमेश्वर के छिपे हुए खज़ानों को उजागर करने के लिए **बुद्धि और जिज्ञासा** दी गई थी।

सृष्टि पर प्रभुत्व

परमेश्वर ने आदम से कहा था कि "प्रभुत्व रखो", जिसका अर्थ है कि **आदम को पृथ्वी पर शासन करने के लिए बनाया गया था।**

आदम सिर्फ़ एक **महिमावान माली ही नहीं**, बल्कि एक **शासक** था।

पतन से पहले, **आदम का प्रकृति पर** पूर्ण **नियंत्रण था**।

यीशु ने इस प्रभुत्व का प्रदर्शन किया।



तूफ़ान को शांत किया (मरकुस 4:39)



अन्न की मात्रा बढ़ाई (यूहन्ना 6:1-14)

पाप के संसार में आने से पहले **आदम** के पास भी ऐसा ही **अधिकार** हो सकता था।

मानवजाति का मूल आहार

उत्पत्ति 1:29
फिर परमेश्वर ने उनसे कहा, "सुनो, जितने बीजवाले छोटे-छोटे पेड़ सारी पृथ्वी के ऊपर हैं और जितने वृक्षों में बीजवाले फल होते हैं, वे सब मैंने तुम को दिए हैं; वे तुम्हारे भोजन के लिये हैं;



मनुष्य मूल रूप से शाकाहारी था।

मांसाहार जलप्रलय के बाद ही शुरू हुआ (उत्पत्ति 9:3)

सभी जीवित प्राणियों के लिए परमेश्वर का प्रावधान

उत्पत्ति 1:30
"और जितने पृथ्वी के पशु, और आकाश के पक्षी, और पृथ्वी पर रेंगनेवाले जन्तु हैं, जिनमें जीवन का प्राण हैं, उन सब के खाने के लिये मैंने सब हरे-हरे छोटे पेड़ दिए हैं," और वैसा ही हो गया।"

परमेश्वर ने सभी प्राणियों के लिए पौधे उपलब्ध कराए - मनुष्य और पशु दोनों मूल रूप से शाकाहारी थे।

यह सृष्टि में परमेश्वर के प्रावधान पर ज़ोर देता है।

सृष्टि पर परमेश्वर की अंतिम स्वीकृति

उत्पत्ति 1:31
"तब परमेश्वर ने जो कुछ बनाया था, सब को देखा, तो क्या देखा, कि वह **बहुत ही अच्छा है**। तथा साँझ हुई फिर भोर हुआ। इस प्रकार छठवाँ दिन हो गया।"

उत्पत्ति 1 में यही एकमात्र अवसर है
जब परमेश्वर अपनी सृष्टि को 'बहुत अच्छा'
कहता है जो पूर्णता और सिद्धता दर्शाता है।

न कोई पाप था, न कोई दुख, न कोई मृत्यु - संसार अपनी संपूर्ण अवस्था में था।

बाइबल परमेश्वर के अस्तित्व को स्वीकार करती है

उत्पत्ति 1 में **परमेश्वर** का **32 बार** उल्लेख किया गया है।

बाइबल परमेश्वर के अस्तित्व को सिद्ध करने का कोई प्रयास नहीं करती - बल्कि इसकी पुष्टि करती है।

भजन संहिता 14:1: मूर्ख ने अपने मन में कहा है, "कोई परमेश्वर है ही नहीं।'"

सृष्टिकर्ता के रूप में परमेश्वर की भूमिका को स्वीकार करने के लिए **विश्वास आवश्यक है।**

परमेश्वर की सृष्टि उसकी शक्ति और स्वरूप को प्रकट करती है

रोमियों 1:20
"क्योंकि उसके अनदेखे गुण, अर्थात् उसकी सनातन सामर्थ्य और परमेश्वरत्व, जगत की सृष्टि के समय से उसके कामों के द्वारा देखने में आते हैं, यहाँ तक कि वे निरुत्तर हैं।"

संसार स्वयं परमेश्वर का प्रमाण है - उसकी शक्ति, बुद्धि और दिव्य स्वरूप।

उत्पत्ति 1 झूठे विश्वदृष्टिकोणों का खंडन करता है

बहुदेववाद का खंडन करता है - **केवल एक ही परमेश्वर है** जिसने सभी वस्तुओं की रचना की है।

पदार्थ की शाश्वतता का खंडन करता है - "आदि में" दर्शाता है कि **पदार्थ का एक आरंभिक बिंदु था**।

सर्वेश्वरवाद का खंडन करता है - परमेश्वर **अपनी सृष्टि से अलग है**, उसका भाग नहीं।

भाग्यवाद का खंडन करता है - परमेश्वर अपनी इच्छा से कार्य करता है, संयोग या भाग्य से नहीं।

उत्पत्ति 1 की उल्लेखनीय विशेषताएँ

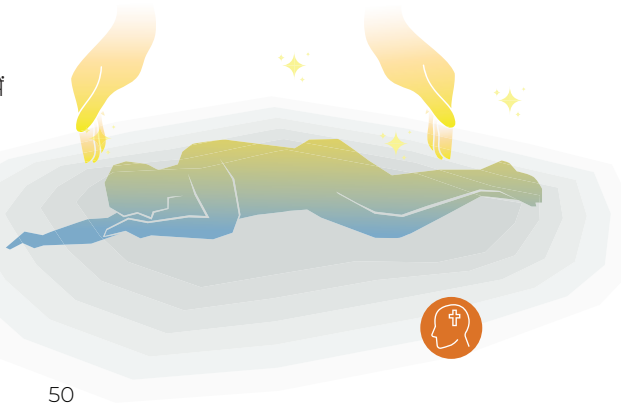
डॉ. मैकगी उत्पत्ति 1: 2 से 31 में **चार प्रमुख विशेषताओं** पर प्रकाश डालते हैं

1
क्रम
सृष्टि एक संरचित, तार्किक क्रम का अनुसरण करती है।

2
प्रगति
प्रत्येक दिन पिछले दिन पर आधारित होता है।

3
शीघ्रता
ईश्वर बोलता है, और वस्तुएँ तुरंत अस्तित्व में आ जाती हैं।

4
पूर्णता
सृष्टि दोषरहित और पापरहित थी।



चिंतन करें और लागू करें

1. **चिंतन:** सृष्टि में परमेश्वर की अद्भुतता

यशायाह 40 परमेश्वर की महानता को शक्तिशाली ढंग से घोषित करता है, हमें याद दिलाता है कि **उसने अपने हाथ की हथेली में जल को नापा** और **आकाश को परदे की तरह फैलाया** (यशायाह 40:12, 22)। जब हम उत्पत्ति 1:2-31 को देखते हैं, तो हम देखते हैं कि कैसे परमेश्वर की सृष्टि उसकी **व्यवस्था, प्रगति, तत्परता और पूर्णता** को दर्शाती है।

- **व्यवस्था:** परमेश्वर ने ब्रह्मांड को एक संरचना के साथ डिज़ाइन किया है—कुछ भी यादच्छिक नहीं है।
- **प्रगति:** उसने उद्देश्यपूर्ण ढंग से सृष्टि की, प्रत्येक चरण पर निर्माण किया।
- **तत्परता:** केवल उसके वचन ने ही सब कुछ तुरंत अस्तित्व में ला दिया।
- **पूर्णता:** पाप के आने से पहले दुनिया दोषरहित थी।

सृष्टि में परमेश्वर की शक्ति को समझने से आपके उसे देखने के तरीके में क्या बदलाव आता है?

अनुप्रयोग

यशायाह 40:26 कहता है, **"अपनी आँखें ऊपर उठाओ, और देखो कि किसने इन वस्तुओं को बनाया है, कौन उनके समूह को गिनकर बाहर निकालता है; वह उन सब को नाम लेकर बुलाता है।**
उसकी शक्ति की महानता और उसकी शक्ति के बल से, एक भी गायब नहीं है"।

पिछली बार आप परमेश्वर की सृष्टि को देखकर विस्मित कब हुएथे?

सृष्टि में परमेश्वर की उत्तम व्यवस्था और शक्ति को जानने से आपको
अपने जीवन के लिए उसकी योजना में कैसे विश्वास मिलता है?

आपको अपने जीवन के किन क्षेत्रों में समर्पण करना चाहिए, यह विश्वास करते हुए कि परमेश्वर उसी **व्यवस्था, प्रगति, तत्परता और पूर्णता** के साथ कार्य करता है?

आज परमेश्वर की महानता के लिए चिंतन, स्तुति और धन्यवाद करने के लिए कुछ समय निकालें!

2. **चिंतन:** मनुष्य की रचना में परमेश्वर के उद्देश्य को समझना

उत्पत्ति 1:26-27 में कहा गया है, **"तब परमेश्वर ने कहा, 'हम मनुष्य को अपने स्वरूप में बनाएँ, अपनी समानता के अनुसार; वे प्रभुत्व रखें...' इसलिए परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप में बनाया; परमेश्वर के स्वरूप में उसने उसे बनाया; नर और नारी उसने उन्हें बनाया" (NKJV)।**

डॉ. मैक्गी इस बात पर ज़ोर देते हैं कि मनुष्य को **आत्मा, प्राण और शरीर** के साथ विशिष्ट रूप से बनाया गया है
(1 थिस्सलुनीकियों 5:23) ताकि:

- **जाना जा सके** आत्मा (आध्यात्मिक संबंध) के माध्यम से परमेश्वर को।
- **समझें** आत्मा (मन, भावनाएँ और इच्छाशक्ति) के माध्यम से परमेश्वर की इच्छा को।
- **कार्य करें** शरीर के माध्यम से (संसार में भौतिक क्रियाएँ) परमेश्वर के उद्देश्यों पर ।

परमेश्वर ने जानबूझकर मानवजाति को पृथ्वी पर **शासन करने, उसे वश में करने और उसका प्रबंधन करने के लिए बनाया,** जो उसके दिव्य अधिकार को दर्शाता है। पाप के संसार में आने से पहले, आदम ने उसी तरह प्रभुत्व का प्रयोग किया जैसे बाद में मसीह ने प्रकृति पर अधिकार प्रदर्शित किया (मरकुस 4:39, यूहन्ना 6:1-14)।

यह जानना कि आप परमेश्वर के स्वरूप में बने हैं, आपके जीवन जीने के तरीके को कैसे बदलता है?

लागू करें

नीतिवचन 25:2 - "परमेश्वर की महिमा, गुप्त रखने में है
परन्तु राजाओं की महिमा गुप्त बात के पता लगाने से होती है।"

परमेश्वर ने आपको अपने छिपे हुए खज़ानों को सीखने, खोजने और उजागर करने की क्षमता दी है।

- परमेश्वर ने आपको अपने छिपे हुए खज़ानों को सीखने, खोजने और उजागर करने की क्षमता दी है।
- आप परमेश्वर की महिमा के लिए अपने मन, हृदय और शरीर का उपयोग किन तरीकों से कर रहे हैं? आप अपनी स्वतंत्र इच्छा, नैतिक ज़िम्मेदारी और कार्यों को मसीह के स्वरूप में परिपक्व होने के लिए कैसे बेहतर ढंग से संरेखित कर सकते हैं?



आज प्रार्थना करें, परमेश्वर को धन्यवाद दें कि उन्होंने आपको अपनी छवि में बनाया है और प्रार्थना करें कि वे आपकी आत्मा, प्राण और शरीर के साथ उनके उद्देश्य को पूरा करने में आपकी मदद करें!

3. **सुसज्जित करें और साझा करें**: उत्पत्ति 1 के सत्य की रक्षा

उत्पत्ति 1:2-31 न केवल ईश्वर की सृष्टि का वर्णन करता है, बल्कि **झूठे विश्वदृष्टिकोणों का खंडन भी करता है**:

- **एकेश्वरवाद** - **केवल एक ही सच्चा ईश्वर है** जिसने सभी वस्तुओं की रचना की है। (बहुदेववाद नहीं)
- **पदार्थ की रचना** - **ब्रह्मांड की एक निश्चित शुरुआत थी** ("आदि में, ईश्वर...") (पदार्थ शाश्वत नहीं है)।
- **ईश्वर की श्रेष्ठता** - वह अपनी **सृष्टि से अलग है,** उसका हिस्सा नहीं है (सर्वेश्वरवाद का खंडन)।
- **ईश्वर की संप्रभुता** - सृष्टि **उसकी इच्छा** से हुई, संयोग या भाग्य से नहीं। (कोई भाग्यवाद नहीं)

आप उत्पत्ति 1 के इन सत्यों का उपयोग दूसरों को बाइबल की सृष्टि और बहुदेववाद, सर्वेश्वरवाद, और भाग्यवाद जैसे झूठे विश्वदृष्टिकोणों के बीच अंतर करना सिखाने के लिए कैसे कर सकते हैं?

लागू करें

विभिन्न मान्यताओं से भरी दुनिया में आप **दूसरों को परमेश्वर के सत्य को देखने** में कैसे मदद कर सकते हैं?



परमेश्वर के वचन को सिखाने में बुद्धि और स्पष्टता के लिए प्रार्थना करें, जिससे दूसरों को सृष्टि में उसके सत्य को समझने में मदद मिले!

आपकी सीख

अपने जीवन में '**परमेश्वर की बुद्धि**' को अपनाएँ।

मैक्गी का उद्धरण



"अध्याय 1 में एक तथ्य यह है कि इस अध्याय में परमेश्वर का बत्तीस बार उल्लेख किया गया है। बाइबल परमेश्वर के अस्तित्व को सिद्ध करने का प्रयास नहीं करती। क्यों नहीं? क्योंकि परमेश्वर कहते हैं, "मूर्ख ने अपने मन में कहा है, कोई परमेश्वर नहीं है...।" -भजन 14:1"


उत्पत्ति
2:1 - 25

आपके अध्ययन के लिए

धर्मग्रंथ: उत्पत्ति 2.1-25
पढ़ने का समय: 30-35 मिनट

प्रार्थना

आगे बढ़ने से पहले, आइए एक मिनट के लिए परमेश्वर से प्रार्थना करें कि वह हमारे हृदय, मन, कान और आँखों को उनकी दिव्य रचना को समझने के लिए मार्गदर्शन प्रदान करें।

बाइबल अंश

और प्रभु परमेश्वर ने मनुष्य को भूमि की मिट्टी से रचा,
और उसके नथनों में
जीवन का श्वास फूंक दिया; और मनुष्य जीवित प्राणी बन गया।
- उत्पत्ति 2:7 (NKJV)

पुनरावृत्ति का नियम
प्रकाशन का परमेश्वर का सिद्धांत



उत्पत्ति 2 सृष्टि के विवरण को क्यों दोहराता है?

प्रकाशन के **परमेश्वर के महान सिद्धांत** का अनुसरण करता है, जिसे **पुनरावृत्ति का नियम** कहा जाता है।

परमेश्वर का आत्मा अक्सर **मुख्य तथ्यों को संक्षेप में बताता है** और फिर किसी **विशेष पहलू पर अधिक विस्तार से प्रकाश** डालता है।

यह विधि पूरे धर्मग्रंथ में देखी जाती है, जैसे:

व्यवस्थाविवरण - व्यवस्था की पुनरावृत्ति नहीं, बल्कि 40 वर्षों बाद व्याख्या पर ज़ोर देने वाला दृष्टिकोण

चार सुसमाचार- एक दृष्टिकोण, मसीह के जीवन और शिक्षा पर ज़ोर देने वाला

सब्त का दिन आर
एक आध्यात्मिक विश्राम



उत्पत्ति 2:1-3 (एनकेजेवी)
"तब परमेश्वर ने सातवें दिन को आशीष दी और उसे पवित्र ठहराया, क्योंकि उसमें उसने विश्राम किया अपने सारे काम से जो परमेश्वर ने रचा और बनाया था।"

क्या परमेश्वर ने इसलिए विश्राम किया क्योंकि वह थक गया था?



परमेश्वर ने इसलिए विश्राम किया क्योंकि उसका कार्य पूरा हो गया था, और कुछ और करने की आवश्यकता नहीं थी।

आध्यात्मिक सत्य: सब्त मसीह में विश्राम का प्रतीक है (इब्रानियों 4:9-10)।

विश्वासी **परमेश्वर के पूर्ण छुटकारे** में प्रवेश करते हैं

रोमियों 5:1
" क्योंकि हम विश्वास से धर्मी ठहरे, तो अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर के साथ मेल रखें "

उद्धार पूर्ण है
हमें **इसके लिए कोई प्रयास नहीं करना पड़ता**;
मसीह ने यह सब कर दिया है।

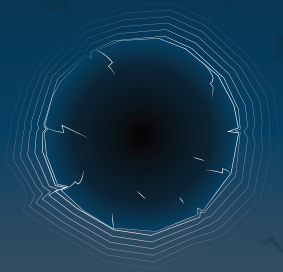
सारांश
पुनर्स्थापना के पहले 5 दिनों का

उत्पत्ति 2:4
"आकाश और पृथ्वी का इतिहास यह है जब वे सृजे गए,
जिस दिन प्रभु परमेश्वर ने पृथ्वी और आकाश को बनाया।"

सृष्टि नई नहीं थी, बल्कि एक पुनर्स्थापना थी

केवल परमेश्वर ही जानता है कि उत्पत्ति 1:2 से 31 में उसके कार्य से पहले इस विशाल जगत (उत्पत्ति 1:1) को बनाने के बाद से कितने साल बीत चुके हैं।





एक आपदा (संभवतः **शैतान के पतन** से जुड़ी) ने पृथ्वी को अराजकता और उजाड़ में छोड़ दिया (उत्पत्ति 1:2)।

उत्पत्ति 1 में परमेश्वर का कार्य



व्यवस्था लाई



घर तैयार किया, मानवजाति के लिए



पृथ्वी पौधों और पशु जीवन से आबाद की

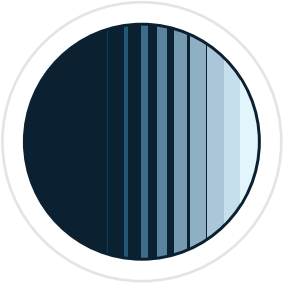
मनुष्य की रचना
ईश्वर का प्रत्यक्ष कार्य



उत्पत्ति 2:7
"और प्रभु परमेश्वर ने भूमि की मिट्टी से मनुष्य को रचा, और उसके नथनों में जीवन का श्वास फूंक दिया, और मनुष्य जीवित प्राणी बन गया।"

3 चरण सृष्टि के

चरण 1



अकार्बनिक पदार्थ
"आदि में, परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की रचना की" (उत्पत्ति 1:1)

चरण 2



जैविक जीवन
"परमेश्वर ने बड़े-बड़े समुद्री जीव और हर जीवित वस्तु की रचना की" (उत्पत्ति 1:21)

चरण 3



मानव जीवन
मनुष्य को एक अद्वितीय प्राणी के रूप में बनाया गया है, जो जानवरों से अलग है (उत्पत्ति 1:27-28)

मनुष्य को जानवरों से अलग क्या बनाता है?



विकास नहीं समझा सकता

- मानव वाणी
- मानव विवेक
- मानव व्यक्तित्व

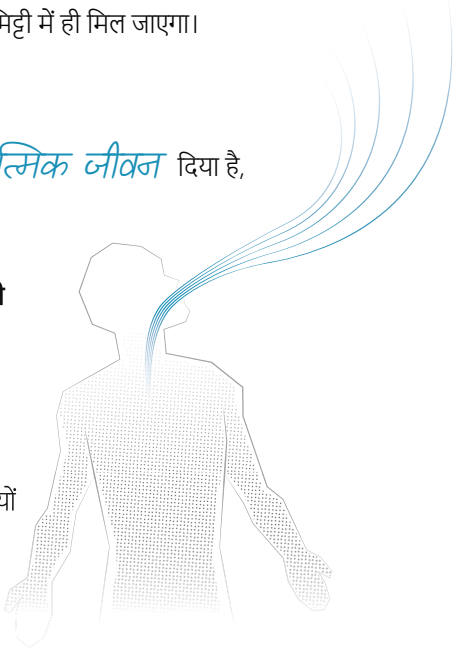
शारीरिक रूप से, मनुष्य मिट्टी से बना है, लेकिन मनुष्य मिट्टी से कहीं बढ़कर है।

मनुष्य की रचना पर प्रमुख शिक्षाएँ

मनुष्य धूल से बढ़कर है

शारीरिक रूप से, मनुष्य मिट्टी से बना है और मृत्यु के बाद मिट्टी में ही मिल जाएगा।

हालाँकि, मनुष्य केवल भौतिक नहीं है - परमेश्वर ने उसे *आध्यात्मिक जीवन* दिया है, और उसके पास एक आत्मा है जो परमेश्वर के पास लौट जाएगी।



परमेश्वर के जीवन के श्वास ने मनुष्य को एक जीवित आत्मा दी

उत्पत्ति 2:7- "तब यहोवा परमेश्वर ने आदम को भूमि की मिट्टी से रचा, और उसके नथनों में जीवन का श्वास फूँक दिया; और आदम जीवित प्राणी बन गया।"

परमेश्वर ने मनुष्य में जीवन **फूंक** दिया, जिससे वह अन्य सभी प्राणियों से अलग हो गया। "मनुष्य अब अपने सृष्टिकर्ता के साथ एक अद्भुत रिश्ते में प्रवेश कर चुका है।"

परमेश्वर द्वारा दिए गए जीवन के दो पहलू

शारीरिक/मनोवैज्ञानिक जीवन - एक मानव के रूप में सोचने, महसूस करने और कार्य करने की क्षमता।

आध्यात्मिक जीवन - परमेश्वर से जुड़ने, उसकी आराधना करने और उसके साथ अनंत काल का अनुभव करने की क्षमता।



मनुष्य का अपने रचयिता के साथ एक अनोखा रिश्ता है

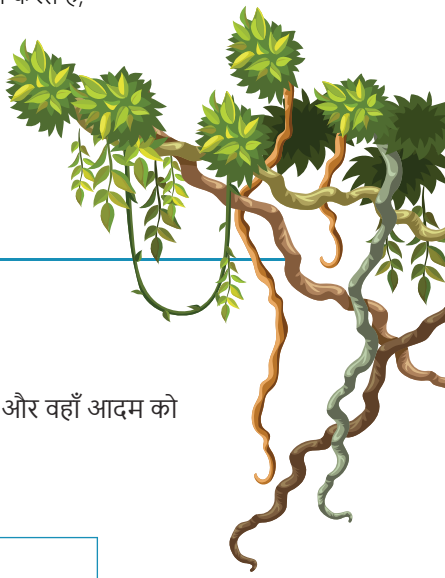
जानवरों के विपरीत, मनुष्यों में ईश्वर को जानने और उनकी आराधना करने और ईश्वर द्वारा कहे गए कार्यों को करके उनकी सेवा करने की आध्यात्मिक क्षमता होती है।

यह क्षमता मनुष्यों को अन्य सभी सृजित प्राणियों से अलग करती है।

परमेश्वर के लिए मनुष्य की क्षमता

क्योंकि परमेश्वर ने मनुष्य में प्राण फूँके, इसलिए उसे परमेश्वर के साथ एक सहज संबंध के साथ रचा गया। मनुष्य परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करने में सक्षम है।

यही कारण है कि लोग अर्थ, उद्देश्य और आध्यात्मिक पूर्णता की खोज करते हैं, जो वास्तव में केवल परमेश्वर में ही पाई जा सकती है।



अदन का बगीचा
एक आदर्श घर

उत्पत्ति 2:8
"और यहोवा परमेश्वर ने पूर्व की ओर, अदन में एक वाटिका लगाई; और वहाँ आदम को जिसे उसने रचा था, रख दिया।"

बगीचा सुंदर था फिर भी कार्यात्मक



प्रत्येक वृक्ष **देखने में सुखद था और जिनके फल खाने अच्छा था** (उत्पत्ति 2:9)।

परमेश्वर ने **मनुष्य को जीवित रहने के लिए आवश्यक हर चीज़ प्रदान की**।



दो
विशेष वृक्ष



जीवन का वृक्ष
अनन्त जीवन प्रदान करता है



ज्ञान का वृक्ष
अच्छाई और बुराई का
निषिद्ध वृक्ष जिसने मनुष्य की आज्ञाकारिता की परीक्षा ली।

मनुष्य की पहली ज़िम्मेदारी
पृथ्वी पर शासन करना

उत्पत्ति 2:15
"तब यहोवा परमेश्वर ने आदम को लेकर अदन की वाटिका में रख दिया, कि वह उसमें काम करे और उसकी रखवाली करे।"

मनुष्य केवल माली नहीं था!

उसका **सृष्टि पर प्रभुत्व था**

प्रकृति ने **उसकी आज्ञाओं** का पालन किया

उसे पृथ्वी की देखभाल, विकास और **उस पर शासन करना था**

पहला आदेश और स्वतंत्र इच्छा

उत्पत्ति 2:16-17
"और यहोवा परमेश्वर ने आदम को यह आज्ञा दी, "तू वाटिका के किसी भी वृक्षों का फल खा सकता है;
Cपर भले या बुरे के ज्ञान का जो वृक्ष है, उसका फल तू कभी न खाना: क्योंकि जिस दिन तू उसका फल खाएगा उसी दिन अवश्य मर जाएगा।"



डॉ. वर्नन मैक्गी ने कहा,

> मनुष्य वर्तमान में परीक्षण अवधि में है; देखिए, मनुष्य के पास स्वतंत्र इच्छा है। विशेषाधिकार हमेशा ज़िम्मेदारी के साथ आता है। यह एक निर्विवाद सत्य है।
> स्वतंत्र इच्छा वाले व्यक्ति को यह निर्धारित करने के लिए एक परीक्षा से गुजरना होगा कि वह परमेश्वर की आज्ञा मानेगा या नहीं।

मनुष्य परीक्षण अवधि में था।

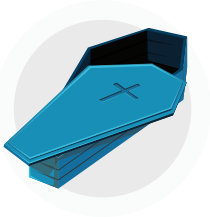
चुनाव ने ज़िम्मेदारी पैदा की - आदम के पास स्वतंत्र इच्छा और जवाबदेही थी (स्वतंत्र इच्छा का ज़िम्मेदारी से उपयोग करने और परमेश्वर के प्रति जवाबदेह होने के लिए)।

मृत्यु = अलग होना

आध्यात्मिक मृत्यु (तत्काल)
पाप करते ही आदम ईश्वर से अलग हो गया था।



शारीरिक मृत्यु (अंततः)
आदम 900+ वर्षों तक जीवित रहा, लेकिन उसकी मृत्यु हो गई।



नारी की रचना
एक आदर्श साथी



उत्पत्ति 2:16-17
और यहोवा परमेश्वर ने आदम को यह आज्ञा दी, "तू वाटिका के किसी भी वृक्षों का फल खा सकता है; पर भले या बुरे के ज्ञान का जो वृक्ष है, उसका फल तू कभी न खाना: क्योंकि जिस दिन तू उसका फल खाएगा उसी दिन अवश्य मर जाएगा।"

आदम पहले अकेला क्यों था?



उसे एहसास कराने के लिए
एक साथी की आवश्यकता

उत्पत्ति 2:21-22
और यहोवा परमेश्वर ने आदम को गहरी नींद में डाल दिया, और वह सो गया; और उसने उसकी एक पसली निकालकर उसकी जगह मांस भर दिया। फिर उस पसली को, जिसे प्रभु परमेश्वर ने मनुष्य से निकाला था, उसने स्त्री बना दिया, और उसे आदम के पास ले आया।"

हव्वा की रचना का महत्व

उसे आदम की **पसली** से लिया गया था, न कि उसके **सिर** से (उस पर शासन करने के लिए) और न ही उसके **पैरों** से (उसके अधीन रहने के लिए)।

वह उसे **पूरक और पूर्ण** करने वाली थी।

पहला विवाह
परमेश्वर की एकता की योजना

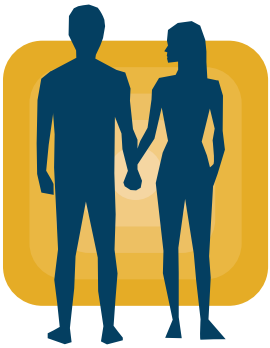
उत्पत्ति 2:23-24
“अब यह मेरी हड्डियों में की हड्डी और मेरे मांस में का मांस है; इसका नाम स्त्री होगा, क्योंकि यह नर में से निकाली गई है। इसलिए, पुरुष अपने माता-पिता को छोड़कर अपनी पत्नी से जुड़ जाएगा, और वे एक तन बन जाएँगे।”

विवाह के लिए परमेश्वर की योजना

पुरुष अपने माता-पिता को **छोड़कर** अपनी पत्नी से **जुड़** जाता है।

वे **एक तन** बन जाते हैं - एक गहरा, आध्यात्मिक, और शारीरिक मिलन।

उसे यह एहसास दिलाने के लिए कि उसका **विवाह पवित्र है**, परमेश्वर द्वारा स्थापित है।



मनुष्य की निर्दोषता
पाप से पहले

उत्पत्ति 2:25
"और वे दोनों, अर्थात् पुरुष और उसकी पत्नी, नंगे थे, और लज्जित नहीं हुए।"

इसका क्या अर्थ है?

वे परमेश्वर की **महिमा से आच्छादित थे।**
कोई **पाप, दोष या लज्जा नहीं थी।**
उत्पत्ति 3 में पाप के कारण उनकी निर्दोषता शीघ्र ही **नष्ट हो जाने वाली थी।**

चिंतन करें और लागू करें

1. चिंतन

यदि ईश्वर ही वह हैं जिन्होंने आपमें जीवन फूंका है और आपको समस्त सृष्टि से अलग बनाया है, तो इस सत्य को आपकी प्राथमिकताओं, निर्णयों और दैनिक जीवन को कैसे आकार देना चाहिए?

- क्या आप **जानबूझकर अपने सृष्टिकर्ता के साथ अपने रिश्ते को जानने और उसमें आगे बढ़ने का प्रयास करते हैं?**
- यह समझना कि आपको **ईश्वर के साथ रिश्ते** के लिए बनाया गया है, **आपके काम, रिश्तों और व्यक्तिगत लक्ष्यों** के प्रति आपके दृष्टिकोण को कैसे बदलता है?
  आप अपने जीवन के किन क्षेत्रों में ईश्वर के संप्रभु **अधिकार के अधीन** रहने के लिए संघर्ष करते हैं?
- आप **ईश्वर के प्रति जवाबदेही** के साथ सक्रिय रूप से कैसे जी सकते हैं, यह जानते हुए कि आपका **जीवन, उद्देश्य और भाग्य** उससे जुड़े हैं?

"क्योंकि हम उसी में जीवित रहते, और चलते फिरते, और स्थिर रहते हैं; जैसे तुम्हारे कितने कवियों ने भी कहा है, 'हम तो उसी के वंश भी हैं।..."
प्रेरितों के काम 17:28

चुनौती

इस हफ़्ते अपनी **प्राथमिकताओं, आदतों और फ़ैसलों** का मूल्यांकन करने के लिए समय निकालें। क्या ये सचमुच आपके सृष्टिकर्ता पर केंद्रित हैं, या ये आत्म-निर्भरता की ओर बढ़ गए हैं?
आप अपने जीवन के सभी क्षेत्रों में **परमेश्वर को सर्वोपरि रखने** के लिए क्या बदलाव ला सकते हैं?

2. चिंतन

यदि परमेश्वर, जो प्रेम है (1 यूहन्ना 4:8), ने मनुष्य को स्वतंत्र इच्छा दी है, तो यह हमारे साथ एक सच्चे रिश्ते की उसकी इच्छा के बारे में क्या प्रकट करता है?

परमेश्वर ने आदम और पूरी मानवता को चुनने की आज़ादी क्यों दी?
स्वतंत्र इच्छा, नियंत्रण के बजाय परमेश्वर के प्रेम को कैसे प्रदर्शित करती है?

- **चुनने की आपकी क्षमता, परमेश्वर पर भरोसा करने और उसकी आज्ञा मानने की आपकी ज़िम्मेदारी को कैसे दर्शाती है?**
- **क्या आप परमेश्वर की आज्ञाओं को प्रतिबंध मानते हैं या अपने जीवन पर उसकी प्रेमपूर्ण सुरक्षा?**
  (रोमियों 13:10 – "प्रेम पड़ोसी को कोई हानि नहीं पहुँचाता;
  इसलिए प्रेम ही व्यवस्था को पूरा करता है।")
- **परमेश्वर से अपने पूरे हृदय, प्राण और मन से प्रेम करने का क्या अर्थ है?**
  (मत्ती 22:37-38)



""यदि तुम मुझसे प्रेम करते हो, तो मेरी आज्ञाओं को मानो।"
यूहन्ना 14:15

चुनौती

उस समय पर विचार करें जब आप आज्ञाकारिता और अवज्ञा के बीच निर्णय लेने में संघर्ष कर रहे थे। इसने परमेश्वर के साथ आपके रिश्ते को कैसे प्रभावित किया? इस सप्ताह, जानबूझकर **आज्ञाकारिता के माध्यम से परमेश्वर पर भरोसा और प्रेम करने का चुनाव करें**, यह स्वीकार करते हुए कि उसकी आज्ञाएँ आपके प्रति उसके प्रेम और देखभाल की अभिव्यक्ति हैं।

3. चिंतन

विवाह और परिवार के लिए परमेश्वर की रचना को समझना हमें पाप से प्रभावित इस दुनिया में बाइबल के रिश्तों को पुनर्स्थापित करने में कैसे मदद करता है?

उत्पत्ति 2:24
"इस कारण पुरुष अपने माता-पिता को छोड़कर अपनी पत्नी से मिला रहेगा और वे एक ही तन बने रहेंगे।"

निम्नलिखित पर विचार करें

परमेश्वर ने आदम और हव्वा दोनों को समान, सह-सक्षम, और सह-संगत साथी के रूप में बनाया। यह आज पुरुष और महिला की भूमिकाओं पर सामाजिक दृष्टिकोण को कैसे चुनौती देता है?

- **पाप ने स्त्री-पुरुष के रिश्ते को बिगाड़ दिया है**, जिसके परिणामस्वरूप पुरुषों का वर्चस्व और समानता के लिए निरंतर संघर्ष हुआ है। मसीह विवाह और परिवार में इस संतुलन को कैसे पुनर्स्थापित करता है? (इफिसियों 5:22-33)
- **विवाह पवित्र है और ईश्वर द्वारा स्थापित है।** आप अपने रिश्तों (चाहे विवाहित हों या अविवाहित) को मसीह के अधीन एकता, प्रेम और पारस्परिक समर्पण के ईश्वर के मूल उद्देश्य के साथ कैसे जोड़ सकते हैं?

- **विवाह और परमेश्वर के प्रति जवाबदेही:** जब एक पुरुष और स्त्री अपने माता-पिता के अधिकार और जवाबदेही से अलग होकर विवाह में प्रवेश करते हैं और पति-पत्नी दोनों स्वयं को परमेश्वर के अधिकार के अधीन करते हैं, तो परमेश्वर का यह सिद्धांत दंपति को उनकी प्रभुता के अधीन जीवन जीने का एक महत्वपूर्ण अवसर कैसे प्रदान करता है?
- **आदम और हव्वा नंगे थे, फिर भी उन्हें कोई लज्जा नहीं थी।** इससे हमें उस आत्मिक, भावनात्मक और संबंधों की शुद्धता के बारे में क्या पता चलता है, जिसे परमेश्वर ने मानवजाति के लिए मूल रूप से ठहराया था? यह हमें परमेश्वर के कौन-से गुण के बारे में बताता है?

चुनौती

इस सप्ताह **1 कुरिन्थियों 11 और इफिसियों 5** पर मनन करें। यदि आप विवाहित हैं, तो अपने जीवनसाथी के साथ चर्चा करें कि परमेश्वर के वचन के अनुसार मसीह के प्रेम और समर्पण को अपने वैवाहिक जीवन में कैसे प्रकट किया जा सकता है। यदि आप अविवाहित हैं, तो स्वयं से पूछें कि आज आप अपने जीवन में परमेश्वर द्वारा ठहराए गए संबंधों के स्वरूप को कैसे बनाए रख सकते हैं।

4. सुसज्जित करें और साझा करें

उत्पत्ति 2 के सत्यों—परमेश्वर की सृष्टि, मनुष्य के निर्माण में उसकी व्यक्तिगत संलग्नता, उसका प्रावधान, उद्देश्य और रिश्तों के लिए उसकी योजना—का उपयोग आप सुसमाचार की व्याख्या करने और किसी को अपने सृष्टिकर्ता के साथ रिश्ता बनाने के लिए आमंत्रित करने के लिए कैसे कर सकते हैं?

आपकी सीख

अपने जीवन में '**परमेश्वर की बुद्धि**' को अपनाएँ।

मैक्गी का उद्धरण



"ईश्वर ने पुरुष को नेतृत्व करने के लिए बनाया था-उसने उसे पहले बनाया-और उसने स्त्री को उसके पीछे आने के लिए बनाया। पुरुष आक्रामक है-ईश्वर ने उसे शारीरिक रूप से भी ऐसा ही बनाया है-और स्त्री प्रतिक्रिया देने वाली है।

मुझे यह मत कहो कि एक पत्नी को अपने पति से प्रेम करना ही होगा। ईश्वर ऐसा नहीं कहते। ईश्वर कहते हैं कि उसे उसकी बात माननी है। अगर वह उससे कहता है, "मैं तुमसे प्रेम करता हूँ," तो वह भी उसे जवाब में कहेगी, "मैं तुमसे प्रेम करती हूँ।" "


उत्पत्ति
3:1 - 13

आपके अध्ययन के लिए

पवित्र शास्त्र : उत्पत्ति 3:1-13
पढ़ने का समय : 30-35min

प्रार्थना



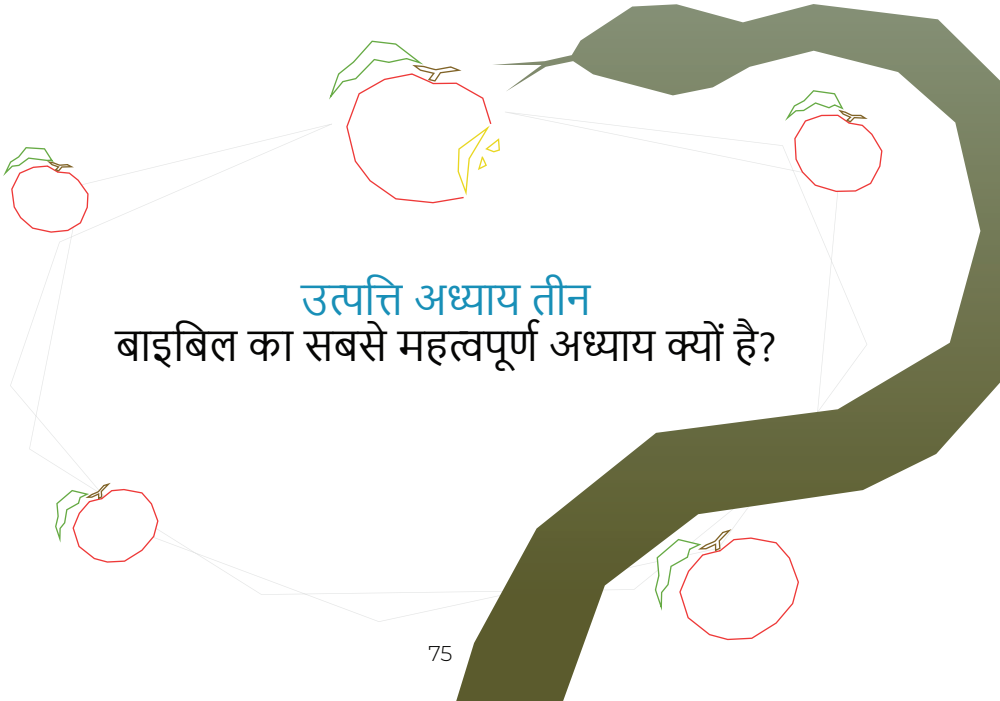
आगे बढ़ने से पहले, हम एक मिनट लें और परमेश्वर से प्रार्थना करें कि वह हमारे हृदय, मन, कान और आँखों को मार्गदर्शन करे, ताकि हम उसकी दिव्य योजना को समझ सकें।

बाइबल अंश



अतः जब स्त्री ने देखा कि उस वृक्ष का फल खाने में अच्छा, और देखने में मनभाऊ, और बुद्धि देने के लिये चाहने योग्य भी है, तब उसने उसमें से तोड़कर खाया; और अपने पति को भी दिया, जो उसके साथ था और उसने भी खाया।

- उत्पत्ति 3:6



उत्पत्ति अध्याय तीन

बाइबिल का सबसे महत्वपूर्ण अध्याय क्यों है?

जब आप पढ़ते हैं



उत्पत्ति 1 और 2

उत्पत्ति 3 को छोड़ दें

उत्पत्ति 4

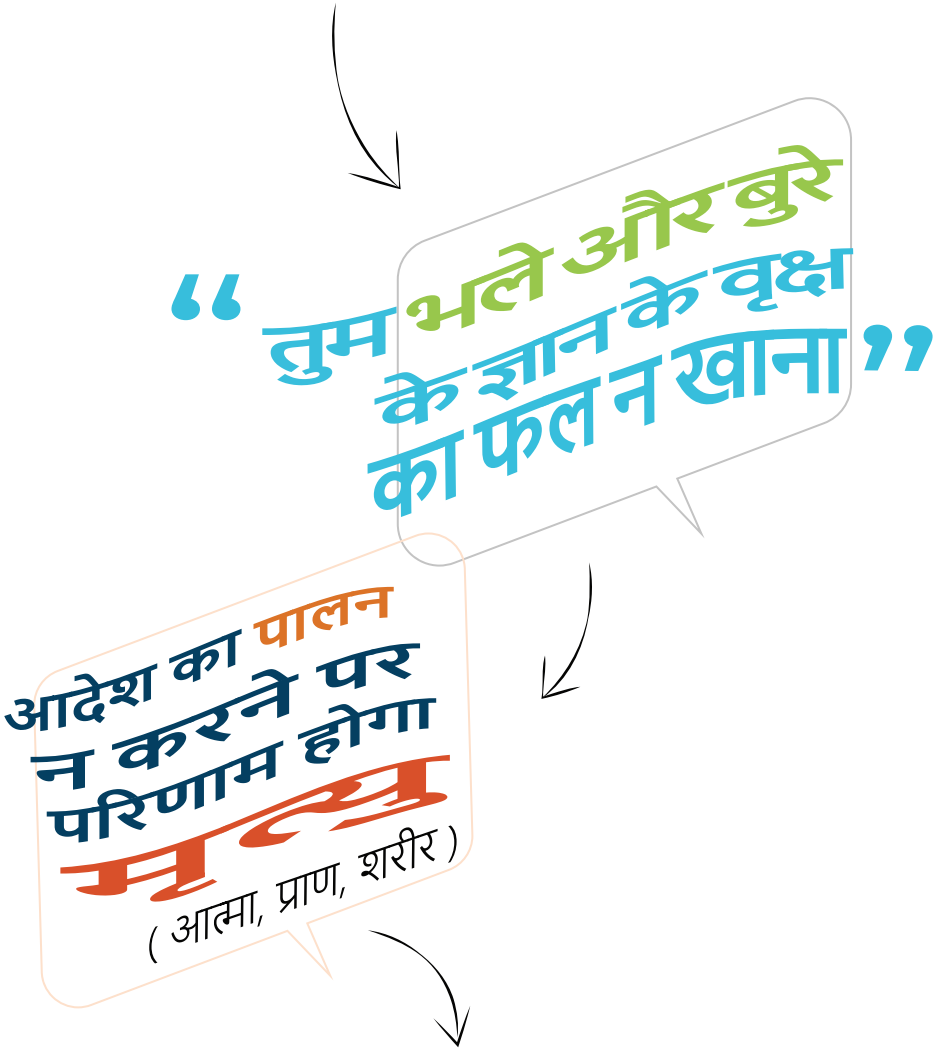
आप सोच रहे होंगे! क्या हुआ **ईश्वर** और **मनुष्य** के बीच? सारा पाप कहाँ से आया?

उत्पत्ति अध्याय 3 हमें बताता है कि पाप **कैसे, क्या, कहाँ और क्यों** उत्पन्न हुआ!

परमेश्वर की दिव्य शासन में, मनुष्य को एक जिम्मेदार प्राणी बनाया गया था

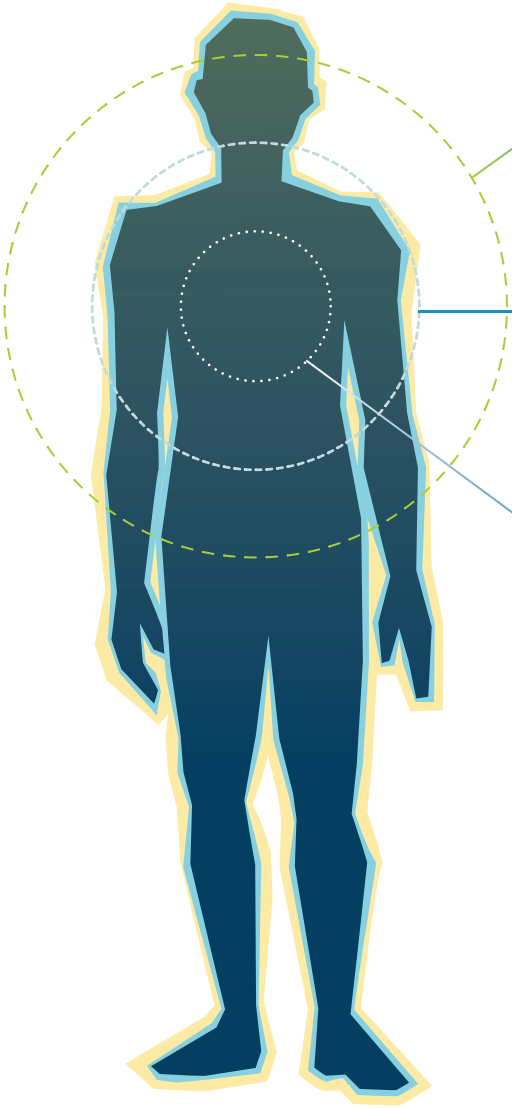
- परमेश्वर के नैतिक चरित्र को चित्रित करने के लिए
- अपने परमेश्वर की आज्ञा मानना
- अपने परमेश्वर की सेवा करना
- उसके न्याय के अधीन रहना

परमेश्वर का आदेश बहुत स्पष्ट था
आदम और हव्वा के लिए बहुत स्पष्ट



मतलब
ईश्वर से अलग हो हो जाओगे

मनुष्य एक त्रिदेवत्व है



शरीर
(भौतिक प्राणी)
बाहरी परत

आत्मा
(मन, इच्छा, भावनाएँ)
आंतरिक परत

आत्मा
(ईश्वर के साथ संबंध)
भीतरी परत

तीन मौतें

पहली मौत
आत्मिक मृत्यु, इफिसियों 2:1
(आत्मा परमेश्वर के साथ रिश्ते से अलग हो गई)

दूसरी मृत्यु
शारीरिक मृत्यु, सभोपदेशक 12:7
(शरीर आत्मा और आत्मा से अलग)

तीसरी मौत
अनन्त मृत्यु, प्रकाशितवाक्य 20:11-15
(आत्मा हमेशा के लिए नरक में अलग हो गई)



उत्पत्ति 1 और 2
मनुष्य को निर्दोष बनाया गया था

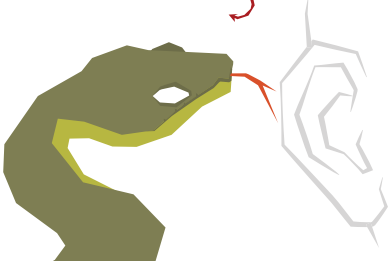
लेकिन चरित्र का विकास केवल प्रलोभन की उपस्थिति में ही हो सकता है

आपका विकास करेगा	आपका विनाश कर देगा
धार्मिकता	एक आदमी ने आज्ञा नहीं मानी, सब पापी हो गए

"क्योंकि जैसे एक मनुष्य के आज्ञा न मानने से बहुत लोग पापी ठहरे,
वैसे ही एक मनुष्य की आज्ञा मानने से बहुत लोग धर्मी ठहरेंगे।"
रोमियों 5:19

शैतान की योजना
मनुष्य का प्रलोभन

कौन है शैतान



यशायाह 14 और यहेजकेल 28 हमें इस अद्भुत क्षमता वाले प्राणी की उत्पत्ति
और वह प्राणी कैसे बना, इसके बारे में पता चलता है।

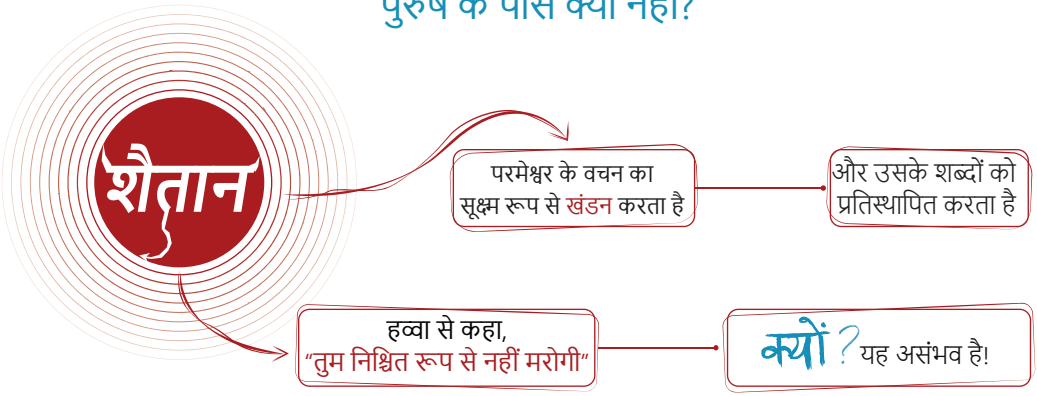
शैतान बगीचे में कैसे आया?

शैतान ने बगीचे में साँप का प्रयोग किया।

सावधान रहें आज शैतान स्वयं को ज्योतिर्मय स्वर्गदूत में बदल रहा है (2 कुरिन्थियों 11:14)।



साँप स्त्री के पास क्यों गया, पुरुष के पास क्यों नहीं?



संदेह पैदा करना परमेश्वर के प्रेम और परमेश्वर की भलाई पर ।

> "यदि ईश्वर अच्छा है तो उसने यह प्रतिबन्ध **क्यों** लगाया?"

शैतान नकारता है
ईश्वर के वचन को

शैतान **का तात्पर्य है**
जब शैतान हव्वा से कहता है कि **ईश्वर धर्मी नहीं है...**



यह कहकर परमेश्वर की पवित्रता
पर प्रश्न उठाता है,

डॉ. जे. वर्नन मैक्गी कहते हैं,

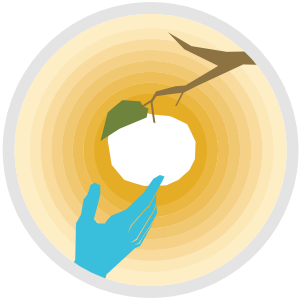
“ रोमियों की पुस्तक हमें विश्वास से आज्ञाकारिता का तथ्य सिखाती है। विश्वास आज्ञाकारिता की ओर ले जाता है और अविश्वास उल्लंघन की ओर। संदेह हमेशा उल्लंघन की ओर ले जाता है। ”

प्रथम संघीय मानव प्रमुख,
आदम और उसकी पत्नी हव्वा

उत्पत्ति 3:6 में परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन किया

शैतान स्त्री को आकर्षित करता है

शारीरिक इच्छाओं को आकर्षित करना
पेड़ खाने के लिए अच्छा था



मनुष्य के मनोवैज्ञानिक भाग को आकर्षित करना
"यह आँखों को सुखद लगा।"



मनुष्य के धार्मिक पक्ष को आकर्षित करना
बुद्धिमान बनने के लिए इच्छित
"मैं ईश्वर से बेहतर कर सकता हूँ"



उत्पत्ति 3:6
"उसने उसका फल तोड़ा और खा लिया।
उसने इसे अपने पति को भी दिया और उसने भी खाया।

ईश्वर की आज्ञा का पालन न करने का परिणाम

(उसका कानून, उसका नियम)



आदम और हव्वा

आँखें खुल गईं

यह दिखाता है हमारे *विवेक को*

पतन से पहले,
मनुष्य निर्दोष था

पतन के बाद,
अंतरात्मा ने गवाही दी कि
उसने पाप किया है

विवेक
ईश्वर का साक्षी है

जो लाता है

अपराध बोध परिसर

किसी व्यक्ति को यह याद दिलाना कि
वह ईश्वर के सामने दोषी है

आदम और हव्वा
अपनी **नग्नता** को छिपाने की कोशिश कर रहे थे



उन्होंने अपने पाप को छिपाने के लिए अंजीर के पत्तों का इस्तेमाल करने की कोशिश की, **लेकिन इससे उनका पाप और शर्म नहीं छुपी**।

आदम और हव्वा ने परमेश्वर से छिपकर अपने पाप को छिपाने की कोशिश की और **वे यह स्वीकार करने को तैयार नहीं थे कि उन्होंने पाप किया है।**

आदम और हव्वा
ईश्वर की उपस्थिति से छिप रहे थे

उत्पत्ति 3:8–9

पाप हमें परमेश्वर से अलग कर देगा (आध्यात्मिक मृत्यु)

आदम और हव्वा खोई हुई अवस्था में थे।

डॉ. जे. वर्नन मैक्गी कहते हैं,

“ यहोवा परमेश्वर ने उसे पुकारा और कहा, "आदम, तू कहाँ है?" आदम का नुकसान: परमेश्वर उसे ढूँढ़ रहा है, न कि मनुष्य परमेश्वर को। ”

दोषारोपण का खेल
“पास द बकेट”

उत्पत्ति 3:10-12

पाप का परिणाम
हर इंसान पर



चिंतन करें और लागू करें

1. चिंतन

रोमियों 13:8 से 10 पढ़ें और जानें कि परमेश्वर ने आदम
और हमें आज्ञाएँ क्यों दीं। और यह हमें परमेश्वर के हृदय और गुणों के बारे में क्या बताता है (हबक्कूक 1:13, "तेरी आँखें ऐसी शुद्ध हैं कि तू बुराई को देख ही नहीं सकता, और दुष्टता को देख ही नहीं सकता।"

लागू करें

यह जानना कि परमेश्वर कौन है, उसने आज्ञाएँ क्यों दीं और उसने अपनी सभी आज्ञाओं को एक ही आज्ञा में कैसे समाहित कर दिया, हमारे लिए इसे आसान बनाता है। यह आपको उससे प्रेम करने और उसके लिए जीने के लिए कैसे प्रेरित, प्रोत्साहित और प्रेरणा देता है?

हम परमेश्वर के प्रति कृतज्ञता कैसे प्रकट कर सकते हैं कि उसने मसीह में हमें सब कुछ उदारतापूर्वक दिया है (1 कुरिं. 1:30) मसीह में एक नई सृष्टि के रूप में (2 कुरिं. 5:17)?



डॉ. जे. वर्नन मैक्गी कहते हैं,

“ मनुष्य को एक जिम्मेदार प्राणी बनाया गया था, और उसे महिमा देने, आज्ञा मानने, सेवा करने और ईश्वरीय सरकार के अधीन रहने के लिए जवाबदेह बनाया गया था। ”

2. चिंतन

- आप परमेश्वर की सर्वोच्च सत्ता और उसके प्रति अपनी ज़िम्मेदारी के प्रति निरंतर जागरूक कैसे रह सकते हैं?
- परमेश्वर के चरित्र के अनुरूप "ज़िम्मेदारी भरे चुनाव" करने का क्या अर्थ है?
- उस समय के बारे में सोचें जब आपको एक नैतिक निर्णय लेना पड़ा था। आपने उस निर्णय के परमेश्वर के साथ अपने रिश्ते पर पड़ने वाले परिणामों पर कैसे विचार किया?

लागू करें

- आप कैसे सुनिश्चित कर सकते हैं कि आपके दैनिक निर्णय परमेश्वर के अधिकार, इच्छा और चरित्र के अनुरूप हों?
- अपने हाल के निर्णयों और कार्यों पर विचार करें। परमेश्वर और दूसरों के साथ अपने रिश्ते को नुकसान पहुँचाने से बचने के लिए आपको क्या बदलाव करने की ज़रूरत थी?
- आप निर्णय लेते समय परमेश्वर का मार्गदर्शन लेने की आदत कैसे विकसित कर सकते हैं?

3. चिंतन

अपने भीतर के पापी स्वभाव के प्रभाव पर चिंतन करें, और उस 'पाप चक्र' का अवलोकन करें जो हमें अपने पतित स्वभाव में विरासत में मिला है।

ईश्वर के साक्षी **'विवेक' का उद्दीपन - अपराधबोध, शर्म, भय, छिपाव, दोष?**

लागू करें

पहचानें कि उपरोक्त **पाप चक्र हमारे चरित्र को कैसे नष्ट करता है और मसीह ने पाप चक्र पर विजय पाने में हमारी मदद के लिए क्या किया है।** (2 कुरिन्थियों 5:21, रोमियों 8, 1 यूहन्ना 1:5-10)।

आदम और हव्वा के प्रलोभन में, शैतान मनुष्य की आत्मा और परमेश्वर के बीच आना चाहता था। इस रिश्ते को नष्ट करके मनुष्य को अपने ऊपर जीतना चाहता था ताकि वह मनुष्य का परमेश्वर बन जाए। (इफिसियों 2:2-3)।

ध्यान दें कि शैतान आदम और हव्वा, आपके और मेरे साथ (1 यूहन्ना 2:16), और जंगल में प्रभु यीशु के साथ (मत्ती 4, मरकुस 1 और लूका 4) यही हथकंडे अपनाता है।

आदम और हव्वा **उत्पत्ति 3**	**आपके और मेरे साथ** **1 यूहन्ना 2:16**	**प्रभु यीशु मसीह** **उत्पत्ति 3**
"पेड़ खाने के लिए अच्छा था" शरीर से आकर्षित (शारीरिक ज़रूरत)	**"संसार में जो कुछ भी है"** **"देह की वासना"**	**"आज्ञा दो कि ये पत्थर रोटी बन जाएँ"** शरीर से आकर्षित (शारीरिक ज़रूरतें)
"आँखों को सुकून देने वाला एक पेड़" फेल्श के मनोवैज्ञानिक पहलू को आकर्षित करता है	**"आँखों की वासना"**	**"शैतान उसे एक बहुत ऊँचे पहाड़ पर ले गया और उसे दुनिया के सारे राज्य और उनका वैभव दिखाया।"** मन को आकर्षित करना
"बुद्धिमान बनाने के लिए वांछनीय वृक्ष" मनुष्य के आध्यात्मिक पक्ष को आकर्षित करता है	**"जीवन का अभिमान"** ईश्वर से प्रतिस्पर्धा। मनुष्य का धार्मिक पक्ष	**अपने आप को मंदिर के शिखर से नीचे फेंक दो'** **यह धार्मिक पक्ष या आध्यात्मिक पक्ष के** लिए एक आकर्षित थी

लागू करें

हमारे प्रभु यीशु मसीह के सामने शैतान की चालें कामयाब नहीं हो सकीं।
उन्होंने आत्मा के मार्गदर्शन में परमेश्वर के वचन का इस्तेमाल करके शैतान को उसकी जगह पर खड़ा किया।

अपनी परिस्थिति लिखिए और बताइए कि आप पवित्र आत्मा की शक्ति से परमेश्वर के वचन का इस्तेमाल करके शरीर की अभिलाषा, आँखों की अभिलाषा और जीविका के घमंड से कैसे निपटेंगे।



डॉ. जे. वर्नन मैक्गी कहते हैं,

“ चरित्र का विकास केवल प्रलोभन की उपस्थिति में ही हो सकता है। ”

लागू करें

शरीर, संसार और शैतान के प्रलोभन की उपस्थिति में आप अपने अंदर रहने वाले मसीह को किस प्रकार प्रतिक्रिया करने देंगे और अपने अंदर उसके चरित्र को विकसित करने देंगे?

4. सुसज्जित करें और साझा करें

आप उत्पत्ति 2 की सच्चाइयों - परमेश्वर की सृष्टि, मनुष्य के निर्माण में उसकी व्यक्तिगत भागीदारी, उसके प्रावधान, उद्देश्य और रिश्तों की रूपरेखा - का उपयोग सुसमाचार की व्याख्या करने और किसी को अपने सृष्टिकर्ता के साथ रिश्ता बनाने के लिए आमंत्रित करने के लिए कैसे कर सकते हैं?

आपकी सीख

अपने जीवन में '**परमेश्वर की बुद्धि**' को अपनाएँ।

मैक्गी का उद्धरण



“ इस प्रलोभन में शैतान आत्मा और ईश्वर के बीच आना चाहता था। दूसरे शब्दों में, वह मनुष्य को ईश्वर से अलग करना चाहता था। मनुष्य को अपनी ओर आकर्षित करना चाहता था और मनुष्य का ईश्वर बनना चाहता था। देखिए, उस समय मनुष्य को देह के प्रलोभन वैसे भी आकर्षित नहीं करते थे। वह चोरी करने, झूठ बोलने या लालच करने के लिए प्रलोभित नहीं था। वह तो बस ईश्वर पर संदेह करने के लिए प्रलोभित था। ”


उत्पत्ति
3:14 - 24

आपके अध्ययन के लिए

पवित्र शास्त्र : उत्पत्ति 3:14-24
पढ़ने का समय : : 15-30min

प्रार्थना



आगे बढ़ने से पहले, हम एक मिनट लें और परमेश्वर से प्रार्थना करें कि वह हमारे हृदय, मन, कान और आँखों को मार्गदर्शन करे, ताकि हम उसकी दिव्य योजना को समझ सकें।

बाइबल का पद



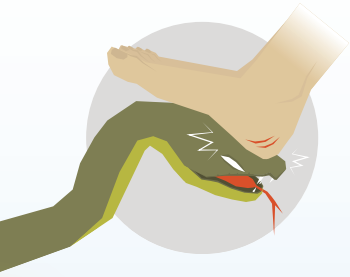
और मैं तेरे (अर्थात शैतान) और स्त्री के बीच में, और तेरे वंश और उसके वंश के बीच में बैर उत्पन्न करूंगा; (यह मसीह था) वह तेरे सिर को कुचल डालेगा, और तू उसकी एड़ी को डसेगा।

- उत्पत्ति 3:15

शैतान पर अपने न्याय में परमेश्वर ने मसीहा, **मसीहा के आगमन** का वादा कैसे किया, और अपने न्याय से हमारे उद्धार की आशा कैसे प्रदान की?

ईश्वर का न्याय शैतान पर

उत्पत्ति 3:15
"और मैं तेरे (अर्थात् शैतान) और स्त्री के बीच, और तेरे वंश और उसके वंश के बीच बैर उत्पन्न करूँगा; (वह मसीह था) वह तेरे सिर को कुचल डालेगा, और तू उसकी एड़ी को डसेगा।"



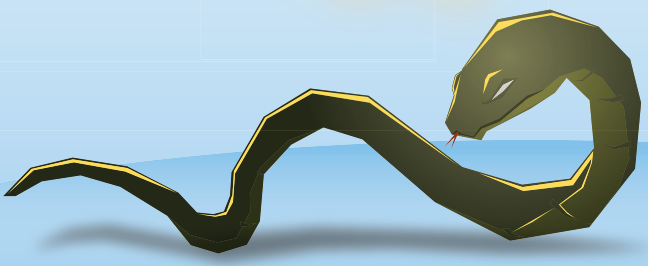
परमेश्वर ने मनुष्य को बड़ी आशा देने के लिए शैतान पर यह न्यायदंड सुनाया।

पहली भविष्यवाणी - क्रिस्त, मसीहा की

पहला सुसमाचार (शुभ समाचार) -
संसार के उद्धारकर्ता मसीह

अंतिम विजय तो मिलेगी, लेकिन अच्छाई और बुराई के बीच एक लंबा संघर्ष अपेक्षित है।





शैतान ने मान लिया कि उसने मानवजाति पर विजय प्राप्त कर ली है ताकि वह परमेश्वर से शत्रुता जारी रख सके।

हालाँकि, **परमेश्वर के न्याय ने घोषित किया, "और मैं तेरे वंश (शैतान) और उसके वंश (मसीह) के बीच शत्रुता उत्पन्न करूँगा।"**



यहाँ दो बीजों के बीच
एक टकराव, एक लंबा संघर्ष है।



प्रभु यीशु
ने परमेश्वर की संतानों और शैतान की संतानों के बीच अंतर बताया।

तुम अपने पिता शैतान के हो, और अपने पिता की इच्छाओं को पूरा करना चाहते हो।
वह शुरू से ही हत्यारा है और सत्य पर कायम नहीं रहता, क्योंकि उसमें सत्य है ही नहीं। जब वह झूठ बोलता है, तो अपने ही साधनों से बोलता है, क्योंकि वह झूठा है
और झूठ का पिता है।

यूहन्ना 8:44

इसमें परमेश्वर की सन्तान और शैतान की सन्तान स्पष्ट हैं: जो कोई धार्मिकता का पालन नहीं करता, वह परमेश्वर का नहीं है, और न वह जो अपने भाई से प्रेम नहीं रखता।

1 यूहन्ना 3:10

मसीह में अंतिम विजय होगी। (प्रकाशितवाक्य 20 और 21) तब तक, मसीह में प्रत्येक व्यक्ति को प्रलोभन का सामना करना होगा और पवित्र आत्मा और परमेश्वर के वचन की सहायता से युद्ध जीतना होगा।

डॉ. जे. वर्नन मैक्गी कहते हैं,

“ मसीह के आने से पहले, विजय विश्वास की आज्ञाकारिता के माध्यम से होती थी। मसीह के आने के बाद, हमें विश्वास के माध्यम से स्वयं को मसीह के साथ जोड़ना है। बचाए जाने का क्या अर्थ है? इसका अर्थ है मसीह में। ”

उत्पत्ति 3:15
“उसका वंश” – मसीह के कुंवारी जन्म का संकेत देता है।

ध्यान दें: परमेश्वर ‘मनुष्य का बीज’ नहीं, बल्कि **“उसका वंश”** कहता है।

यशायाह 7:14 में परमेश्वर फिर से नींव रखता है

“इसलिए **प्रभु स्वयं** तुम्हें एक संकेत देंगे:
देखो, एक कुंवारी गर्भवती होगी और एक पुत्र को जन्म देगी, और उसका नाम इम्मानुएल रखेगी।”

700 साल बाद, यह वादा/भविष्यवाणी पूरी हुई।
(पढ़ें: मत्ती 1:18-23)



मोक्ष ईश्वर द्वारा मनुष्य की खोज है, न कि मनुष्य द्वारा ईश्वर की खोज!

आदम और हव्वा पाप करने के बाद परमेश्वर से दूर भाग गए, **और बाकी मानवता ने भी ऐसा ही किया।**

परन्तु परमेश्वर ही तो था जो उसे बुलाने आया,

"तुम कहाँ हो ?"

आप देखेंगे कि परमेश्वर अपने वचन के माध्यम से मनुष्य तक पहुँचता है।

रोमियों 3:11, यूहन्ना 15:16; 1 यूहन्ना 4:19

परमेश्वर पुरुषों और महिलाओं तक पहुँचता है और **मसीह के माध्यम** से **उद्धार** प्रदान करता है।

परमेश्वर का न्याय **स्त्री** पर

उत्पत्ति 3:16



वह **दुःख और पीड़ा** के बिना बच्चे को दुनिया में नहीं ला सकती।

दिलचस्प बात यह है कि जो चीज़ **खुशी लाती है और मानव परिवार को आगे बढ़ाती है**
उसे **दुःख और पीड़ा से होकर** ही आना पड़ता है।

परमेश्वर का न्याय आदमी पर

उत्पत्ति 3:17-19

उत्पत्ति 3:19
"अपने माथे के पसीने की रोटी खाया करेगा, और **अन्त में मिट्टी में मिल जाएगा**, क्योंकि उसी में से तू बनाया गया है;
तू मिट्टी तो है, और **मिट्टी ही में फिर मिल जाएगा।"**



मृत्यु
पाप की मजदूरी

मृत्यु क्या है? यह है *अलग हो जाना*

आध्यात्मिक मौत

इसका अर्थ है ईश्वर से अलगाव



जिस क्षण आदम और हव्वा ने आज्ञा का उल्लंघन किया, उनकी आत्मा परमेश्वर से अलग हो गई।

मृत्यु का अर्थ है परमेश्वर से अलगाव

शेष मानवता - इस संसार में जन्म लेने वाला प्रत्येक मानव जीवन आध्यात्मिक रूप से मृत है, परमेश्वर से अलग है।

"जो अपराधों और पापों में मरे हुए थे।"
- इफिसियों 2:1

शारीरिक मौत

इसका मतलब है कि प्राण और आत्मा शरीर से अलग हो गई है



जब कोई व्यक्ति शारीरिक रूप से मृत हो जाता है, तो उसकी आत्मा और प्राण का क्या होता है?

"... तब मिट्टी ज्यों की त्यों मिट्टी में मिल जाएगी, और आत्मा उस परमेश्वर के पास लौट जाएगी जिसने उसे दिया।"
- सभोपदेशक 12:7

आदम की शारीरिक मृत्यु उस दिन नहीं हुई जिस दिन उसने भले और बुरे के ज्ञान का फल खाया था, बल्कि उसके 900 से अधिक वर्षों बाद हुई।

हालाँकि, अवज्ञा के तुरंत बाद, वह आध्यात्मिक रूप से मर गया (परमेश्वर से अलग हो गया)। वह परमेश्वर से दूर भाग गया और यहाँ तक कि अपने शरीर को ढकने के लिए अंजीर के पत्ते भी सिल दिए।

अंतहीन मौत



इसका अर्थ है हमेशा के लिए ईश्वर से अलग हो जाना

महान श्वेत सिंहासन के न्याय में - **यीशु मसीह न्यायाधीश हैं-**
वह एक व्यक्ति पर उसके पापों के लिए निर्णय सुनाते हैं क्योंकि उसने यीशु मसीह के माध्यम से परमेश्वर द्वारा दिए गए उद्धार के प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया था।

और जो लोग उद्धार को अस्वीकार करते हैं, उन्हें "आग की झील में डाल दिया जाएगा।"
- प्रकाशितवाक्य 20:10, 15

जहाँ "वे दिन-रात युगानुयुग पीड़ा में रहेंगे।"
- प्रकाशितवाक्य 20:10, 15

मुक्तिदाता ईश्वर
मुक्ति का सिद्धांत
(शाश्वत सत्य)

केवल परमेश्वर ही मनुष्य को बचाने की पहल कर सकता है

परमेश्वर पाप की मज़दूरी एक ऐसे बलिदान के माध्यम से चुकाता है जो पापियों (आदम और हव्वा) **के स्थान** पर **मर गया।**

परमेश्वर ने ऐसा उन्हें छुड़ाने, उन्हें बचाने, परमेश्वर के साथ उनके रिश्ते को पुनर्स्थापित करने और **उन्हें अनन्त मृत्यु से बचाने के लिए किया,** जहाँ **उन्हें हमेशा-हमेशा के लिए यातनाएँ दी जाएँगी।**

"और यहोवा परमेश्वर ने आदम और उसकी पत्नी के लिए चमड़े के अंगरखे बनाए,
और उन्हें पहना दिए।" - उत्पत्ति 3:21

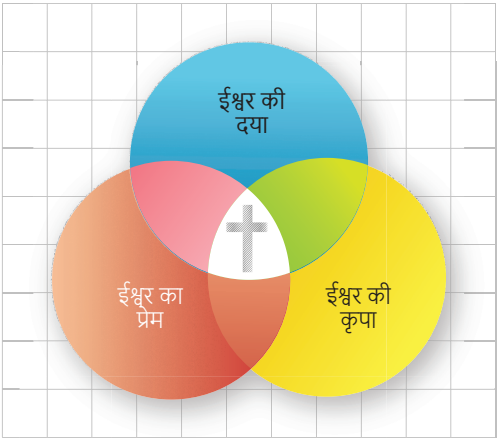
बलिदान की शुरुआत प्रतिस्थापन के माध्यम से शुरू होता है



याद रखें, प**रमेश्वर ने उनके अंजीर के पत्तों को अस्वीकार कर दिया था**, उ**नके वस्त्र को परमेश्वर को स्वीकार्य बनाने के लिए**, वस्त्र के लिए खाल प्राप्त करने हेतु जानवरों को **मारना पड़ा था**।

परमेश्वर मनुष्य पर दया, अनुग्रह और प्रेम दिखाता है

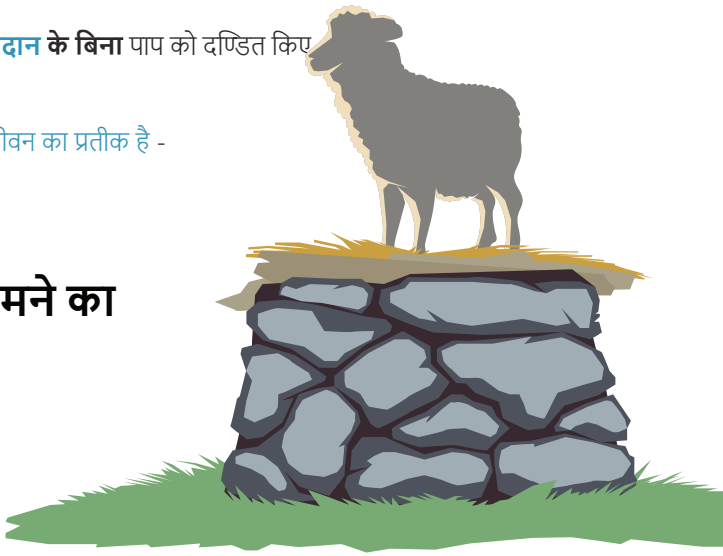
और **व्यवस्था (परमेश्वर की व्यवस्था)** के अनुसार लगभग सभी वस्तुएँ लहू के द्वारा शुद्ध की जाती हैं, और **बिना लहू बहाए** क्षमा **(पापों की क्षमा)** नहीं होती। इब्रानियों 9:22



क्यों?

क्योंकि **परमेश्वर न्यायी** है, वह **बलिदान के बिना** पाप को दण्डित किए बिना नहीं छोड़ेगा।

"शरीर का जीवन लहू में है" - लहू जीवन का प्रतीक है - (लैव्यव्यवस्था 17:11)



बलि का रक्त नर मेमने का होना चाहिए,
बिना किसी दोष के

क्यों?

परमेश्वर के न्याय से बचने के लिए, जो पवित्र और धर्मी है, पाप को नज़रअंदाज़ न करते हुए **अपना न्याय** करेगा।

परमेश्वर की असीम पवित्रता के मानक के अनुरूप एक ऐसे **प्रतिस्थापन की मृत्यु आवश्यक थी** जो **निर्दोष, शुद्ध और निष्कलंक** हो।

परमेश्वर द्वारा पापी को क्षमा करने, मेल-मिलाप कराने और संबंध को पुनः स्थापित करने के लिए।

इसकी कीमत एक और जीवन देकर चुकानी पड़ी

डॉ. जे. वर्नन मैक्गी ने कहा,

> “ जब आदम और हव्वा अदन की वाटिका से निकले, तो उन्होंने रक्त-बलि को देखा। उन्होंने ठीक वही देखा जो मूसा ने **परमपवित्र स्थान** में **दया-आसन** पर रखा था: दो देवदूत उस रक्त को देख रहे थे जो वहाँ था - और यही परमेश्वर तक पहुँचने का मार्ग था। ”

ईश्वर तक वापस जाने का रास्ता **रक्त बलिदान** के माध्यम से ही होकर गुजरता है।



पढ़ें: **उत्पत्ति 3:22-24**

मनुष्य को **जीवन के वृक्ष** के द्वारा नहीं बचाया जा सकता।

परन्तु परमेश्वर के पास आने के लिए मनुष्य को रक्त बलिदान के द्वारा बचाया जाना आवश्यक है।

ईश्वर का वादा, प्रावधान और मानवजाति के लिए आशा

- मसीह परमेश्वर का मेम्ना

“जैसे उसने हमें जगत की उत्पत्ति से पहले ही
उसमें चुन लिया था, कि हम प्रेम में
उसके सामने पवित्र और
निष्कलंक हों,”

1 पतरस 1:20

"देखो! परमेश्वर का मेम्ना जो
जगत का पाप
उठा ले जाता है!"

यूहन्ना 1:29



मेमने का बलिदान क्रूस की ओर संकेत करता है, जहाँ **यीशु मसीह हमें परमेश्वर के दिव्य क्रोध से बचाने के लिए अंतिम बलिदान है।**

देखो,
यह परमेश्वर का
मेम्ना है,
जो जगत के पाप
हरता है।

-यूहन्ना 1:29

चिंतन करें और लागू करें

ईश्वर के गुण

ईश्वर कैसा है?

उसका हृदय कैसा है?



1. विचार

सोचिए कि **आदम और हव्वा को बचाने के लिए परमेश्वर ने क्या किया पाप से समझौता किए बिना, अपने दिव्य न्याय से -**
फिर भी उसने छुटकारे के माध्यम से दिव्य प्रेम दिखाया।

अपने **प्रति परमेश्वर के हृदय** के बारे में आपने जो कुछ जाना, उसे लिखिए।

फिर, प्रभु के इस कार्य के लिए उनका धन्यवाद कीजिए।

2. विचार

यीशु मसीह - परमेश्वर का वादा और हमारे उद्धार की पूर्ति

इस संसार में सभी का उद्धार **केवल परमेश्वर ही** कर सकता है।

इस प्रकार, **उद्धारकर्ता परमेश्वर ही होना चाहिए,** जिसे मनुष्य बनना होगा,
ताकि वह परमेश्वर और मनुष्य के बीच एक आदर्श मध्यस्थ बन सके।

परमेश्वर की असीम पवित्रता और उसकी सभी
आवश्यकताओं को समझने और पूरा करने के लिए, ताकि मनुष्य के बीच सामंजस्य स्थापित हो और उसकी गहनतम आवश्यकता पूरी हो सके।

अपने पुत्र को भेजने का परमेश्वर का वादा ही एकमात्र तरीका है जिससे वह हमें बचा सकता है।

लागू करें

आप क्या मानते हैं कि परमेश्वर ने मसीह में आपके लिए क्या किया है, ताकि आप उद्धार पा सकें और परमेश्वर के परिवार का हिस्सा बन सकें?

(यूहन्ना 1:29; यूहन्ना 3:15-17; 2 कुरिं. 5:21; प्रेरितों के काम 2:37, रोमियों 5:14,15; इब्रानियों 2:14-15; 1 तीमु. 1:15; 1 यूहन्ना 3:5-8)

परमेश्वर के साथ हमारा मेल-मिलाप कराने के लिए **मसीह** ने जो भूमिकाएँ निभाईं और निभा रहे हैं, उनकी सूची बनाएँ।

(1. कुरिं. 1:30; 1. कुरिं. 15:20; 1 तीमु. 2:5-6; इब्रा. 6:20; 1. कुरिं. 1:18, रोमियों 3:19, 1. यूहन्ना 2:2; 1 पतरस 1:18-19; 1. कुरिं. 6:20; 2 कुरिं. 5:18-21; रोमियों 5:10,11; इफिसियों 2:16; कुलुस्सियों 1:20-22; मत्ती 19:28; तीतुस 3:5; 1 कुरिं. 1:30; 1 थिस्सलुनीकियों 4:3,4; 2 थिस्सलुनीकियों 2:13 और 1 पतरस 1:2)

3. **वचिार**



डॉ. जे. वर्नन मैक्गी कहते हैं,

“ उद्धार तभी मिलता है जब हम और आप परमेश्वर के समक्ष पापी के रूप में अपना उचित स्थान ग्रहण करते हैं। ”

क्या आपने परमेश्वर के **उद्धार** के उपहार को स्वीकार किया है? यदि नहीं, तो आप इसे इस प्रकार स्वीकार कर सकते हैं।

"... मनुष्य के पुत्र को ऊपर उठाया जाना आवश्यक है, ताकि जो कोई उस (यीशु मसीह) पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए। क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।" 17 क्योंकि परमेश्वर ने अपने पुत्र को जगत में इसलिये नहीं भेजा कि जगत पर दण्ड की आज्ञा दे, परन्तु इसलिये कि जगत उसके द्वारा उद्धार पाए।" यूहन्ना 3:14ख-17

"...यदि तू अपने मुँह से **यीशु** को प्रभु जानकर **अंगीकार** करे, और **अपने मन से विश्वास करे**, कि **परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया है**, तो तू निश्चय **उद्धार** पाएगा। 10 **क्योंकि धार्मिकता के लिये मन से विश्वास किया जाता है,** और **उद्धार के लिये मुँह से अंगीकार किया जाता है।**" रोमियों 10:9-10।

4. सुसज्जित करें और साझा करें



डॉ. जे. वर्नन मैक्गी की अंजीर के पत्तों पर शिक्षा

“ अंजीर के पत्तों से और इस तथ्य से कि परमेश्वर ने उन्हें चमड़े से ढका था, हम चार महान शिक्षाएं पाते हैं। ”

- **परमेश्वर के पास जाने के लिए मनुष्य के पास पर्याप्त आवरण होना चाहिए। आप अपने अच्छे कर्मों के आधार पर परमेश्वर के पास नहीं आ सकते। आपको वैसे ही आना होगा जैसे आप हैं - एक पापी।**
- **अंजीर के पत्ते अस्वीकार्य हैं; वे घर में बने होते हैं। परमेश्वर घर में बना वस्त्र नहीं लेते।**
- **परमेश्वर को आवरण प्रदान करना होगा।**
- **आवरण केवल प्रभु यीशु की मृत्यु के द्वारा ही प्राप्त होता है।”**

आप उत्पत्ति 3:14-24 के अंश से सीखी गई बातों का उपयोग उन लोगों को सुसमाचार समझाने के लिए कैसे करेंगे जो उद्धार नहीं पाए हैं?



आपकी सीख

अपने जीवन में '**परमेश्वर की बुद्धि**' को अपनाएँ।

मैक्गी का उद्धरण



"उद्धार परमेश्वर का मनुष्य को खोजने का कार्य है। मनुष्य परमेश्वर से दूर भाग गया, और परमेश्वर ने उसे पुकारकर कहा, "तू कहाँ है?" ... पूरे पवित्रशास्त्र में परमेश्वर द्वारा मनुष्य को खोजने का यह चित्र दिखाई देता है। पौलुस ने लिखा, "कोई परमेश्वर को नहीं खोजता" (रोमियों 3:11)। प्रभु यीशु ने कहा, "तुम ने मुझे नहीं चुना, परन्तु मैंने तुम्हें चुना..." (यूहन्ना 15:16)। और हम यूहन्ना के साथ कहते हैं, "हम इसलिये प्रेम करते हैं, कि पहले उसने हम से प्रेम किया" (1 यूहन्ना 4:19)। परमेश्वर मनुष्य को खोजते हैं और उसे उद्धार प्रदान करते हैं।"

THRU the BIBLE

हमारे संसाधनों तक पहुँचें

टीटीबी ग्लोबल वेबसाइट तक पहुंचने के लिए, यहां जाएं

www.ttb.org

टीटीबी ग्लोबल ऐप डाउनलोड करने के लिए **क्यूआर कोड** स्कैन करें।
ऐप के ज़रिए आप हमारे ऑडियो स्टडी प्रोग्राम को आसानी से एक्सेस कर सकते हैं।

App Store
IOS उपयोगकर्ताओं के लिए

Google Play Store
एंड्रॉइड उपयोगकर्ताओं के लिए